रसिक दोउ निरतत रंग भरे।
रास कुंज में रास मंडल रचि, जनक लली रघु लाल हरे॥
अमित रूप धरि करि कछु चेटक, जुग जुग तिय मधि श्याम अरे॥

* चतुर्थोऽध्यायः *

राजकन्यारास प्रकरणम्

छन्द रोला :—

कहत कथा कमनीय कठिन कलिमल अघहारी।
बोलेबचन बिशेष सरस श्री रूत सुखारी ॥ १ ॥
अहो शुभानन प्रीति पात्र प्रीतम प्रवीन पद।
पावन प्रेम पवित्र हृदय सज्जन सनेह नद ॥ २ ॥
सिय रघुवर प्रिय भक्त बिशद भावना विभूषित।
सन्त सुखद सुचि सरस सरल सुठि सतत अदूषित ॥ ३ ॥
गुणागार रस मगन भाग्य शाली अनुरागी।
युगल केलि कमनीय कथामृत तव मति पागी ॥ ४ ॥
श्री मद्व्यास महान कृपा सागर गुरुवर मम।
सिय रघुवर रस रास रहस वर विमल उदधि सम ॥ ५ ॥
तिन कीनी कछु कृपा युगल रस रास रसाला।

सुनी सुरन सब बात हृदय दुख पायो भारी।
यह रघुवर नहिं कीन भलो यों कहत पुकारी ॥१०॥
कहँ हम देव महान सकल सुर पुर के बासी।
रघुनन्दन नर रूप कहाँ भूलोक निवासी ॥११॥
हमरी कन्यन संग कीन उन रास बिहारा।
यह अति अनुचित भयेउ हृदय नहिं कीन विचारा ॥१२॥
यहि बिधि सुनि सुर शब्द सभा कीनी चतुरानन।
बोलि लिये सुर सकल वचन बोले वर भावन ॥१३॥
सुनहु अमर मम बैन हृदय में करहु बिचारा।
राम सच्चिदानन्द कंद सब जगत अधारा ॥१४॥
ऋषि मुनि सिद्ध समाज सतत योगी जेहि ध्यावैं।
जाको रसमय ध्यान सदा शिव कबहुँक पावैं ॥१५॥
आदि श्रृष्टि से अद्यावधि लगि जो जग जायो।
तिन सबने बिश्राम राम करुणा से पायो ॥१६॥
अखिल लोक अभिराम राम रघुवंश हंस घन।
पावन परम परेश प्रेम पूरक उदार मन ॥१७॥
उनके प्रति तुम सकल भाव सुन्दर उर लावहु।
नतरु होय जग अयश कदा सुख शान्ति न पावहु ॥१८॥
जानि जिय करहु कुभाव भावना भरहु परम सुचि।
याही में कल्याण जानि कीजै चरणन रुचि ॥१९॥
जो अज अकल अनीह अमल अद्वैत अनानय।
निराकार साकार अगुन गुणनिधि करुणायम ॥२०॥

व्यापक व्याप्य विभूत वदत चहुँ वेद बचन वर ।
परमानन्द प्रकाश पुन्ज पूरति सनेह घर ॥२१॥
सोइ करि कृपा अपार प्रगट भो रघुकुल माहीं ।
हरिहैं यह भू भार असुर हनि सन्सय नाहीं ॥२२॥
तुम्हरी कन्यन संग कीन जो रास बिहारा ।
सो नहिं इनको दोष सुनहु प्रिय बचन हमारा ॥२३॥
यह प्रभु पूरण काम काम नाशक अघहारी ।
निर्विकार निर्लेप सतत सेवक सुख कारी ॥२४॥
तुम्हरी तनयाँ सकल कियो प्रथमहिं तप भारी ।
मैं प्रसन्न हो निकट गयेउ जहँ तव सुकुमारी ॥२५॥
कहेउ लेहु वर मागि यही वर सब ने मागा ।
रघुनन्दन पद कमल देहु अविचल अनुरागा ॥२६॥
प्रीतम प्राण अधार मिलहिं रघुवंश कुंवर वर ।
एव मस्तु मैं कीन कहा इन से प्रमोद भर ॥२७॥
तुम भूतल में जाय सरित सरयू के पासा ।
सन्तानक वन माहिं लतावनि करहु निबासा ॥२८॥
तहँ प्रभु कृपा निकेत तुमहिं सब विधि अपनैइहैं ।
करि पूरण कामना सकल सुख स्वाद चखैइहैं ॥२९॥
तबते तहँ तव सुता लता वनि कीन निबासा ।
बन बिहरन हित गये नृपति सुत हृदय हुलासा ॥३०॥
लता रूप तब सुता सकल प्रभु अँग लपटानी ।
लहिं तिन को स्पर्श चकित बोले धनुपानी ॥३१॥

अहो कौन यह लता रूप मम अँग लपटावै।
बनिता जैसी अंग संग स्पर्श जनावै ॥३२॥
तब में बोलेउ बैन व्योम से सुनहु खरारी।
यह सब देव कुमारि परम पावनि मनहारी ॥३३॥
इनने अति तप कियो दियो मैंने वरदाना।
तुम को निज पति वरन चहैं हे कृपा निधाना ॥३४॥
याते परम उदार आप इन को अपनाइय।
कीजै पूरण आश सकल विधि रमिय रमाइय ॥३५॥
मम आयसु शिर धारि कीन प्रभु रास बिहारा।
यद्यपि सदा स्वतन्त्र राम रघुवंश कुमारा ॥३६॥
विगत विनोद विकार रहित सुख सदन मधुर तर।
राम जगत आधार मोद मन्दिर सनेह घर ॥३७॥
कोटि कोटि कन्दर्प दर्प जेहि देखि नशाई।
अमित कोटि रति रमा उमा छबि लखि ललचाई ॥३८॥
चाहत जाको प्यार कदा कोउ पावत नाहीं।
ऐसे राम सुजान तिनहिं किमि काम सताहीं ॥३९॥
रघुनन्दन पदप्रीति करहु मानहु मम बानी।
नतरु होय बड़ि हानि लेहु अपने जिय जानी ॥४०॥
बिषय बुद्धि जनि करहु महाँ अनुचित अब होई।
भक्त कल्प तरु सुखद राम जानत सब कोई ॥४१॥
जन मन रुचि नित रखत प्रीति पालक रघुराई।
यद्यपि सतत अकाम काम जेहि देखि नशाई ॥४२॥

तुमरी कन्यन हृदय मनोरथ जेहि विधि कीना ।
भक्ति प्रेम परतन्त्र प्रेम पूरक प्रभु दीना ॥४३॥
रघुनन्दन सँग करौं अमल रस रास अपारा ।
कीनो पूरण भाव कृपा निधि राम उदारा ॥४४॥
इनहीं की रस रूप रास लीलादि सुहावन ।
गावत सतत सनेह सहित सुचि हिय मुनि भावन ॥४५॥
नारदादि ऋषि सकल करत रघुवर गुन गाना ।
करत कदा एकान्त बैठि जिन को नित ध्याना ॥४६॥
जिन को हिय अति बिमल रास लीला सोइ ध्यावै ।
जब तक हृदय अशुद्ध कदा मन भूलि न जावै ॥४७॥
यदपि अमित अवतार चरित सबके सुख दाई ।
तदपि राम अवतार चरित कीरति अधिकाई ॥४८॥
सुनत श्रवण सुख श्रवत सकल कल्याण प्रदायक ।
हरन सकल कलि कलुष मोद मन्दिर रघुनायक ॥४९॥
आगे इनके चरित होयं सब को सुख दायक ।
यह मरिहैं खल निकर संग कपि भाल सहायक ॥५०॥
दशकन्धर भय डरत सकल सुर मुनि समुदाई ।
वाहि मारि भू भार हरहिं गे श्री रघुराई ॥५१॥
सकल सुरन सुख सौज असुर लै गये छुड़ाई ।
तिनहिं मारि रघुनाथ करैं सब भाँति सहाई ॥५२॥
पुनि मन करहु बिचार राम पर पुरुष मोद घर ।
अगुन अखण्ड अनन्त अमल अनवद्य सुभग तर ॥५३॥

सुर नर मुनि हित करन हेत रघुकुल में आये।
निज इच्छा तन धारि चरित करि सबहिं लुभाये ॥५४॥
करि आये सुर काज करत करिहैं पुनि आगे।
हरहिं अमंगल मूल शूल सब विधि जो जागे ॥५५॥
अपनी परम अभिन्न शक्ति श्री जनक दुलारी।
नित्यपरम अह्लाद रूप भक्तन हितकारी ॥५६॥
जाकी कृपा कटाक्ष विना नर भक्ति न पावैं।
करि करि कोटि कलेश व्यर्थ ही देह सुखावैं ॥५७॥
परम प्रेम रस रूप सतत रघुवर मन हारी।
निरखत जाके दृगंन होत रघुवीर सुखारी ॥५८॥
संग अनुज अनुकूल अमल अनुपम अविकारी।
वीर धीर गंभीर सतत सन्तन हित कारी ॥५९॥
लै तिन को निज साथ सकल सुर कारज करिहैं।
धर्म बिरोधिन मारि भार भू को सब हरिहैं ॥६०॥
यज्ञ मध्य हविदान बहुरि सब सुरन दिवैइहैं।
इनकी कृपा कटाक्ष सकल सुरमुनि सुख पइहैं ॥६१॥
आत्म तत्त्व मधि मगन ब्रह्म आनँद सुख भोगी।
सब प्रकार सब विषय भोग से परम बियोगी ॥६२॥
सर्व शक्ति शिरमौर आदि शक्ती जग जननी।
परम कृपा आगार सतत रघुवर प्रिय वरनी ॥६३॥
श्रीसीता सुख खानि सदा आश्रित जनपालनि।
प्रगटी तिरहुति माहिं स्वइच्छा मय बपु धारनि ॥६४॥

उनके पितापुनीत हृदय अतिसय बड़ भागी।
त्रण सम तजि सब भोग बने प्रभु पद अनुरागी ॥६५॥
उदय भये बड़ भाग जानकी सम रघुनन्दन।
जामाता सुठि सुघर मिले भक्तन भय भंजन ॥६६॥
क्योंकि पिता निज सुता अदूषित पुरुषहिं अर्पें।
नतरु अयश जग होय दोष लादै निज शिर्पैं ॥६७॥
क्या मिथिलाधिप सरिस अन्य कोई बड़ भागी।
निज जामाता मानि होय प्रभु पद अनुरागी ॥६८॥
आत्म सु चिंतन रूप भाग्य बड़ उदय होय जब।
पितु कन्या अनुरूप सुभग जामात लहै तब ॥६९॥
पुरुष वंश अति अमल जानि पितु कन्या देवत।
सब बिधि दूषण रहित पाय वर जग जस लेवत ॥७०॥
तुम सब के बड़ भाग्य उदय निज हृदय विचारो।
राम सकल गुण सिन्धु अदूषित वेद पुकारो ॥७१॥
भानु वंश अवतंश हंश सम बिमल जासु जस।
यद्यपि अगुन अखण्ड अमल अनवद्य एक रस ॥७२॥
मैं इतनो समझाय कहेउ फिर भी यदि क्षोभा।
ये तुम को नहिं उचित नही तुम सब की शोभा ॥७३॥
यदि मन में यह होय कियो अन्याय नृपति सुत।
तो सुनिये सब सावधान जो कहहुँ प्रेम युत ॥७४॥
कहाँ सुभग सुकुमार श्याम सुन्दर किशोर वर।
राम रम्य रस मूर्ति मधुर मोहन सर्वेश्वर ॥७५॥

अरे कहाँ जगरोग रूप रावण सुर द्रोही।
कामी कुटिल कुचाल कलंकी अतिसय कोही ॥७६॥
वाने क्या नहिं कियो हरीं सब देव कुमारी।
उन संग कीनों रमण नहीं तब नीति बिचारी ॥७७॥
सुरपति को सब भाँति मर्म भेदन तेहि कीना।
सबल शत्रु अभिमान भरो देवन दुख दीना ॥७८॥
वाकी करनी कठिन कहाँ तक कहैं बखानी।
वानेचर अरु अचर दुखी कीने सब प्रानी ॥७९॥
याते तुम से कहत पूज्यतम पूज्य महाना।
परम श्रेष्ठ से श्रेष्ठ पात्र रघुबीर सुजाना ॥८०॥
महाँ रतन धन रूप अहैं सबदेव कुमारी।
शोभा निधि शुभमयी सकल गुणनिधि मनहारी ॥८१॥
अब जनि करहु बिलम्ब जाहु रघुनन्दन पासा।
करि बिनती निज सुता सौंपि जिय लहहु हुलासा ॥८२॥
तुम्हरेहिं हित अवतार लियो रघुवंश प्रभाकर।
करिहैं अति उपकार सुरन सँग प्रभु छबि सागर ॥८३॥
रघुनन्दन गुण रूपशील माधुर्य भाग्य वर।
तव कन्यन उर माहिं कियो अति प्रेम सहित घर ॥८४॥
सब के हिय में प्रवल प्रेम पिय मानि गाढ़ तर।
याते परम विमोहि भईं आसक्त मोद भर ॥८५॥
याही से सब गईं भूमि तल परम सुखारी।
बर बस प्रभु को वरीं जाय सब देव कुमारी ॥८६॥

आलिंगन करि पृथक बहुरि बहु बिनय सुनाई।
कृपासिन्धु रघुवीर लिये सब को अपनाई ॥८७॥
तुमहीं कहौ बिचार दोष क्या प्रभु को अहई।
सुरतरु सम रघुराज यथा रुचि तस फल लहई ॥८८॥
करि छल बल बहु भाँति अगर रघुबीर सुजाना।
हरते यदि तव सुता दोष तो अवसि महाना ॥८९॥
पर तुमरी ही सुता स्वयं रघुवर ढिग जाई।
निज तन मन सब सौंपि काम बासना जनाई ॥९०॥
तो प्रभु को नहिं दोष कृपानिधि श्री रघुनन्दन।
भक्त प्रेम परतन्त्र सतत सेवक सुख कन्दन ॥९१॥
कीनो सब को पाणिग्रहण रघुवर रसिकेश्वर।
दियो सकल सुख स्वाद सबहिं सव विधि सर्वेश्वर ॥९२॥
याते उनको अधिक राग रघुवर पद माहीं।
अब वे तजि रघुवीर आनको चाहत नाहीं ॥९३॥
उनके मन बुधि चित्त सकल प्रभु पद में लागे।
निज आश्रित लखि तिनहिं राम उनके रस पागे ॥९४॥
रघुनन्दन के प्रेम बिबस सब देव कुमारी।
याते प्रभु कहँ अर्पि देहु सब परम सुखारी ॥९५॥
तव कन्या भी सुखी होहिं रघुवर को पाई।
यह तुम सबके भाग्य उदय को हेतु जनाई ॥९६॥
याते अब मिलि सकल देव रघुवर ढिग जाई।
करि विनती सब बाल करहु अर्पण हर्षाई ॥९७॥

कारण अपर महान एक मैं कहहुँ सुनाई ।
तव कन्यन रघुवीर चरण मधि प्रीति दृढ़ाई ॥९८॥
याते उनको छोड़ि अन्य सेवन दुख दाई ।
बिरहानल अति प्रवल देहि पलमाहिं जराई ॥९९॥
अन्य पुरुष करि वरण इनहिं सेवा कर बावै ।
सौऊ अति द्रुत प्रवल विरहनल में जरि जावै ॥१००॥

दो०--जो इन कन्यन को बरै, तेहि रावण सम जान ।
राम जरैइहैं बाँण से, यह मम बचन प्रमान ॥१॥

इनकी सेवा महाँ अनल सम सबहिं जरावै ।
श्री रघुवर को छोड़ि अन्य को इनहिं रमावै ॥ १ ॥
जिमि विदेह जहिं निरखि भाव अनुचित जब धारो ।
दशकन्धर परिवार सहित त्तण में प्रभु जारो ॥ २ ॥
याते जो कोइ पुरुष इनहिं हठ करि के वरिहै ।
सोनिश्चय जानिये प्रवल ज्वाला में जरिहै ॥ ३ ॥
पुनि तुम सव को होइ महाँ अनरथ भयकारी ।
याते चाहो कुशल बात तो मानि हमारी ॥ ४ ॥
ये सब कन्या नित्य शक्ति रूपा रघुवर की ।
याते पावन प्रीति पगीं ललना छबिधर की ॥ ५ ॥
अब सब हो चुप चाप त्यागि अपवाद बिवादा ।
प्रभु को कन्या सौंपि लहहु हिय में अह्लादा ॥ ६ ॥
जैसे जल के वेग नदी सागर में जाई ।
अपनी सत्ता त्यागी सिन्धु में जात समाई ॥ ७ ॥

तिमि वांनेता गण शुद्ध प्रीति भाजन रस रूपा।
रघुनन्दन कर बिकहिं विना गथ निरखि स्वरूपा ॥८॥
जो सरिता अति बेग सहित सागर में जाई।
करै कोटि किन यत्न वाहि नहिं सकै फिराई ॥ ९ ॥
तिमि रघुवर को प्राप्त भईं सब देव कुमारी।
को सामर्थ जो उनहिं बहुरि लेवे लौटारी ॥१०॥
जिमि सरितनि में होय बेग जल को बलवाना।
तिमियुवतिन में प्रेम बारि अति सबल महाना ॥११॥
उनहिं सकै जो रोकि कौन समरथ जग माहीं।
लहि प्रभु को प्रिय प्यार पगीं पल पल हर्षाहीं ॥१२॥
यहि विधि सुनि वर बैन बिमल सब सुर सुख साने।
"सीताशरण" सनेह सहित बिधि को सनमाने ॥१३॥
धरि आयुस निज शीश वन्दि सब सुर सुखपाई।
श्रद्धा भक्ति समेत गये जहँ श्री रघुराई ॥१४॥
करि अभिनन्दन प्रेम सहित वर विनय सुनाई।
पग परि कियो प्रणाम क्षमा अपराध कराई ॥१५॥
पुनि विधि आयसु सरिस करी करनी सुख मानी।
अर्पण कन्या करीं प्रभुहिं सर्वेश्वर जानी ॥१६॥
बोले बिबुध वरूथ बिमल वर बैन हर्षि उर।
ये मम कन्या अखिल विश्व भूषण बिभूति वर ॥१७॥
करहु इनहिं स्वीकार आप अर्पण हम करहीं।
तव दासी यह सतत आपही को हठि वरहीं ॥१८॥

कहिइमि बचन बिनीत सौंपि कन्या समुदाई ।
सुर समाज सुख सहित स्वर्ग गवने हर्षाई ॥१९॥
तब रघुराज किशोर सखिन चितचोर मोदघर ।
पूरण पावन प्रीति पगे प्रणयी प्रवीन तर ॥२०॥
कहत सूत अब सुनहु सरस मति मुनि समुदाई ।
नृप कुल भूषण रूप कीर्ति मूरति रघुराई ॥२१॥
लहि सुठि सुरन प्रसाद कहन पितु से सबहाला ।
करि इच्छा मन मुदित चले रघुवीर रसाला ॥२२॥
अपनी अमल अनूप अकथ अनवद्य स्वरूपा ।
पावन परम प्रकाश पुंज पूरति सुख रूपा ॥२३॥
श्री साकेत सुनाम सुखद सुन्दर सुषमा निधि ।
रघुवर प्रेम प्रमोद दानि अति दिव्य देत सिधि ॥२४॥
गमने श्रीरघुवीर धीर तहँ मोद समाये ।
आये परमानन्द पगे हिय अति हर्षाये ॥२५॥
कींने बिना प्रयास भाग्य शाली जग जेते ।
पावत महाँ विभूति भूरि सुख सम्पति तेते ॥२६॥

परम भागवत भाव भरे अतिसय बड़भागी ।
चक्रवर्ति नृप सरस हृदय प्रभु पद अनुरागी ॥३०॥
देखे करत प्रणाम राम अभिराम काम सम ।
सुन्दर सुखद सुजान श्याम मन हरन मधुर तम ॥३१॥
भरि मन मोद महान परसि शिर हिय हर्षाई ।
कर गहि अति अनुराग लिये निज अंक बिठाई ॥३२॥
कियो मुदित शिर घ्राण चूमि कर कंज सुहावन ।
हर्षित हृदय लगाय पगे प्रेमामृत पावन ॥३३॥
पितु को सूँघब शीश पुत्र की आयु बिबर्धन ।
याते सुत चिरंजीव होय पावै सु मोद मन ॥३४॥
पुनः अखिल विद्वान हृदय मन हरन नेह घर ।
पापताप दुख दोष दमन कर मधुर मोद भर ॥३५॥
बोले बचन विनीत विमल बिधु बदन सुहावन ।
पावन पूरति प्रेम परम सुख प्रद मन भावन ॥३६॥
सुनत श्रवण सुचि सरस सरल सब बिधि छल हीना ।
जो चरित्र बन भयो पिता से सब कहि दीना ॥३७॥
केवल रास छिपाय अपर सब कथा सुनाई ।
जेहि बिधि पाईं देव सुता सुनि नृप हर्षाई ॥३८॥
मन में कियो बिचार भाग्य शाली जग माहीं ।
राजकुमार अनेक तदपि रघुवर सम नाहीं ॥३९॥
यहि विधि देव प्रसाद अन्य कोउ पावत नाहीं ।
याते राम समान अपर कोउ नहिं जग माहीं ॥४०॥

जो जन्मेउँ संसार मध्य मानव तन माहीं।
देवन दर्शन अगम राम सँग सुता बिबाहीं ॥४१॥
तो अवश्य रघुवीर धीर सब विधि सब लायक।
सकल धर्म धुर सुकृत अवधि मूरति रघुनायक ॥४२॥
सुर प्रसाद सर्वथा परम दुर्लभ जग माहीं।
सो पायो मम सुवन क्लेश श्रम पायो नाहीं ॥४३॥
यह सुचि शुभ सन्देश सकल जननी पुरवासी।
पाये परिजन प्रेम पगे सब अवध निवासी ॥४४॥
रघुनन्दन सम अपर भाग्य शाली जग नाहीं।
ऐसेहिं निश्चय करत सकल अपने मन माहीं ॥४५॥
पुनि पितु परम प्रमोद सहित रघुवर से बोले।
सुनहु ललन मनहरन मधुर मम बचन अमोले ॥४६॥
अहो वत्स श्री रामभद्र रघुवर मन भावन।
मेरे जीबन प्राण सबहिं आनन्द बढ़ावन ॥४७॥
एक दैत्य वलवान सम्बरासुर तेहि नामा।
हरीं सकल नर नाग देव तनया तेहि कामा ॥४८॥
दुखी कियो सन्सार मारि वाको रघुराई।
अमित नवल नागरी वन्दि से देहु छुड़ाई ॥४९॥
अति उत्तम सब रूप शील शोभा गुन खानी।
आप समर्थ उदार बरहु उन कों सुख मानी ॥५०॥
अति चलभ्य यह लाभ भली बिधि बात बनाई।
मारि वाहि तुम बरहु सकल कन्या हर्षाई ॥५१॥

तेहि जीते नृप सकल छीनि कन्या समुदाई।
बैजयन्त पुर माहिं दई सब बाल छिपाई ॥५२॥
सकल नृपन निज बिपति आय तब मोहिं सुनाई।
कहा असुर हति नाथ लेहु हम सबहिं बचाई ॥५३॥
मैं सोचत मन रहेउँ मरै किमि दैत्य महाना।
करौं यत्न केहि भाँति मिटै सब के दुख नाना ॥५४॥
लखि तव चरित महान मोद मेरे मन पायो।
तुम अवश्य मारिहो वाहि निश्चय मोहिं आयो ॥५५॥
जग कर्त्ता विधि सहित सकल सुर तव अनुकूला।
तो अवश्य हति असुर आप हरिहैं जगशूला ॥५६॥
वे कन्या सब पूर्व आप को निज पति जानी।
प्रवल कामना करी कीन जप तप सुख मानी ॥५७॥
किये कठिन व्रत नेम क्रिया स्नान अपारा।
तुम को निज पति वरण हेतु निश्चय मन धारा ॥५८॥
सकल सुन्दरी रूपरासि नखसिख सुकुमारीं।
वाकोसुत बलवान प्रवल बन्धन में डारीं ॥५९॥
यद्यपि बन्धन माहिं तदपि सब अति निर्दोषा।
निशि दिनि सुमिरत तुमहिं हृदय में परम भरोसा ॥६०॥
गन्धर्वी गुनरासि यक्ष किन्नरन कुमारी।
बल करि कीनो हरन सबहिं तेहि दुष्ट सुखारी ॥६१॥
नव योवन सम्पन्न सकल सुन्दरी महाना।
तव पद प्रेम अपार कृपा कीनी भगवाना ॥६२॥

दैव दया करि दीन भली बिधि यह संयोगा।
बढ़ै जगत कमनीय कीर्ति कहिहैं भल लोगा ॥६३॥
भावी अति बलवान सकल बिधि भोग प्रदायक।
वाने ही यह रचेउ योग सुन्दर शुभ दायक ॥६४॥
याही से बिन यत्न अमित कन्या सुकुमारी।
तव सँग करन बिहार हेतु उर दृढ़ रुचि धारी ॥६५॥
यह सब उचित प्रबन्ध दीन बिधि ने बनवाई।
याते दैत्य सँहारि बरौ उनको तुम जाई ॥६६॥
सुनि पितु के वर बैन राजनन्दन हर्षाने।
भल आयसु पितु दीन हृदय अतिसय सुख माने ॥६७॥
बहु तप बल ने प्रेरि पितहिं आयसु दिलवाई।
अपनावौं सब बाम कीन निश्चय रघुराई ॥६८॥
जो कोइ प्रेम समेत करै कामना हमारी।
करौं उपेक्षा अगर होय अनुचित यह भारी ॥६९॥
याते अब मैं आय शीघ्र उन को अपनइहौं।
निज सँग सबहिं रमाय सकल बिधि आनँद दैइहौं ॥७०॥
यहि बिधि हृदय बिचारि रसिक चूड़ामणि रघुबर।
चारु चरित्र पवित्र लोक भावन सनेह घर ॥७१॥
बोले बैन सनेह सहित सुख निधि रघुराई।
हे माता हे पिता कृपा कीनी अधिकाई ॥७२॥
दोनो आप पवित्र कृपा सागर सम हम को।
भये सकल सुख दानि अहो जगमें हम सम को ॥७३॥

सुकृत वान यहि भांति सतत निज सुत पर प्रीती।
करहिं उनहिं यह उचित यही सब जग की रीती ॥७४॥
तव आज्ञा अति हर्ष सहित पालौं सुख मानी।
रावरि आयसु सतत मोहिं अति आनँद दानी ॥७५॥
तब आयसु प्रतिपालि लोकमें पूज्य कहाबौं।
तुमरी कृपा प्रभाव भूमितल सुर पद पाबौं ॥७६॥
सव समुभ्कत मोहिं देव सरिस तव कृपा प्रसादा।
तव अनुकम्पा लहौं सदा हिय में अह्लादा ॥७७॥
हमहुँ निजहिं अति सुकृत वान बड़भागी मानत।
यह सब तव कमनीय कृपा नीके हम जानत ॥७८॥
आप सर्व बिधि पूज्य परम हित सतत हमारे।
नित नव मंगल मोहिं होहिं तव कृपा सहारे ॥७९॥
तव आयसु प्रतिपालि पितृ ऋण से छुटि जाबौं।
तुमरी कृपा प्रसाद सतत उर आनन्द पाबौं ॥८०॥
सिंह राशि पर बहुत दिनन में सुर गुरु आये।
गोदावरि तट निकट महातम अधिक बताये ॥८१॥
अबान्तिकापुरि रम्य महातम तासु विशेषी।
भल आयसु प्रभु दीन जाय आवौं तेहि देखी ॥८२॥
जहँखल दल संहार करन हारे कालेश्वर।
उनके दर्शन करौं मुदित पूजौं बिश्वेश्वर ॥८३॥
पुनि अगस्त मुनिराज करौं दर्शन तिन केरो।
पूजि अमल पद कंज हृदय सुख लहौं घनेरो ॥८४॥

मम मन में उत्साह अस्तु तव आयसु मानी।
मैं जावौं यहि समय सतत अपनो शुभ जानी ॥८५॥
यहि बिधि पितु से विनय कीन पितु आयसु पाई।
वन्दि मातु पद कमल मुदित गवने रघुराई ॥८६॥
मधुर मूर्ति सुकुमार मार अगणित मद भंजन।
चले चतुर चितचोर चपल चिवबनि मन रंजन ॥८७॥
समर शूर रणधीर वीर अति अनुपम मूरति।
धनुषवाण कर लसत मनोहर श्यामल सूरति ॥८८॥
चक्रवर्ति नृप सुवन भुवन भूषन सँग माहीं।
सेन साज बहु मण्डलीक नृप चलत सिहाहीं ॥८९॥
दच्छिण दिशि की ओर चले जहाँ शिव कालेश्वर।
गय अवन्तिकापुरी हर्षि तहाँ प्रभु अखिलेश्वर ॥९०॥
करि दर्शन शिव पूजि गये जहँ श्री अगस्त मुनि।
मुनिवर पूजा कीन हर्षि गवने तहँते पुनि ॥९१॥
श्री गोदावरि निकट सुतट पर पहुँचे जाई।
पावन पय अभिषेक कीन अतिसय सुखपाई ॥९२॥
तहँते करि प्रस्थान मुदित मन श्री रघुनन्दन।
वैजयन्त पुर नगर गये भक्तन सुख कन्दन ॥९३॥
दैत्य नगर अति रम्य मन हरन ललित विशाला।
वर विभूति सम्पन्न विविधि हय गय रथ साला ॥९४॥
अमित वीर बलवान भरे भूषण अँग धारे।
सो पुर घेरेउ मुदित राम रघुवंश दुलारे ॥९५॥

दैत्य पुत्र अति सबल महाँ माया सो जानै।
भरो महाँ अभिमान सुरन को त्रण सम मानै ॥९६॥
तेहि जाना पुर घेरि लियो रघुवीर सुजाना।
करि अति क्रोध कराल कठिन सायक सन्धाना ॥९७॥
छाँड़े विशिख अपार राम सब व्यर्थ बनाये।
पुनि तकि तीक्षण तीर हने तेहि मार गिराये ॥९८॥
बाकी सेना रही अपर वीरन संहारी।
असुर अधिक भय खाय गयो पाताल सिधारी ॥९९॥
पाई विजय अपार कीर्ति रघुवंश हंस घन।
सकल सुरन सनमानि करी पूजा प्रसन्न मन ॥१००॥

दो०--बिधि प्रभु को अर्पण किये, अस्त्र शस्त्र बहु आय।
विनय कीन कर जोरि पुनि, सादर शीश झुकाय ॥२॥

लखि प्रभु के कर्तव्य कलित कमनीय सुहावन।
अति प्रसन्न बिधि भये गये जहँ प्रभु मन भावन ॥ १ ॥
तेही समय उदार हृदय सब अस्त्र शस्त्र वर।
प्रभुहिं समर्पण कीन करी विनती सुनेह भर ॥ २ ॥
हे रघुराज किशोर प्रेम रस बोर सु छबिधर।
पूरन काम उदार प्रणत पालक प्रमोद घर ॥ ३ ॥
यह अति अधम महान आततार्इ जग सारो।
कीनो सबहिं बिहाल कृपा करि के प्रभु मारो ॥ ४ ॥
निज अन्तःपुर माहिं अनेकन बाल सुभग तर।
बर बस राखीं पकरि सबहिं अपनाबहु रघुवर ॥ ५ ॥

सुनि बिधि की वर विनय रसिक चूड़ामणि छविधर ।
अपनाईं सब बाल लहेउ यश कीर्ति भूति वर ॥ ६ ॥
दैत्य संकलित अमित रत्न मणिमाल मनोहर ।
स्वर्ण सु बस्तु अपार सुधन वर धन्य सुभगतर ॥ ७ ॥
सब को लै गन्धर्वराज परगीय मान प्रभु ।
आये श्री साकेत सुभग सुषमा निकेत विभु ॥ ८ ॥
पितु पद पद्म प्रणाम प्रीति पगि परम प्रवीने ।
कीनो कृपा निधान नमित नव नेह नवीने ॥ ९ ॥
वरणेउ विशद विचित्र विमल विधु बदन चरित सब ।
सुनि सुख सिन्धु समाय सभा सब लहेउ मोद तब ॥१०॥
पायेउ परमानन्द पिता पूरति प्रमोद उर ।
सुनि सुत के वर बैन ऐत सुख चैन दैन तर ॥११॥
शत्रु समन बिधि कृपा कलित कन्या समुदाई ।
पाये गुनि निज सुतहिं हृदय आनँद न समाई ॥१२॥
गुण सागर सुकुमार सुवन सुख सदन सुघर वर ।
लखि अपने से अधिक अमल कीरति सनेह घर ॥१३॥
अतिसय भये प्रसन्न परम प्रेमामृत पागे ।
निरखत नित सुत बदन हृदय में अति अनुरागे ॥१४॥
पुनि रघुवीर उदार प्रेम पूरक रसिकेश्वर ।
सकल सुन्दरिन केर मनोरथ पूरि मुदित उर ॥१५॥
लहहिं सकल सुख स्वाद भाग्य शाली बे कन्या ।
पावहिं परमानन्द पगीं प्रीतम रस धन्या ॥१६॥

जो जो वे कामना करहिं अपने मन माहीं ।
पूरन करहिं रसेश राजनन्दन सुख लहहीं ॥१७॥
जग में जेते जीव सबहिं प्रभु आश्रय दाता ।
पूरक सब अभिलाष सकल जग जीवन त्राता ॥१८॥
परम उदार समर्थ सकल बनितन सुख दीतो ।
रमि रमाय तिन संग सबहिं अति रसबस कीनो ॥१६॥
निज पूर्वजन सुधर्म कदा प्रभु नहीं मिटावें ।
पर सब बालन संग अहर्निशि रमै रमावें ॥२०॥
क्रीड़ा करहिं अनेक भाँति आनन्द समाये ।
निकर कामिनिन संग रंग रस मोद बढ़ाये ॥२१॥
निज कुल की मरियाद सकल विधि प्रभु निर्वाहत ।
रमत कामिनिन संग हृदय रस रंग बढ़ावत ॥२२॥
परम बिरोधी कर्म एक सँग प्रभु अनुसरहीं ।
सखिन संग नित रमत रमावत हिय सुख भरहीं ॥२३॥
श्रुति मर्यादा पालि सकल जग को रघुराइ ।
शिक्षा देत महान प्रेम मूरति सुख दाई ॥२४॥
अघटित घटना पटीयसी प्रभु को श्रुति कहही ।
सकल हेय गुण रहित एक रस निशिदिन रहही ॥२५॥
यद्यपि अज अनवद्य अमल प्रभु विरज कहावें ।
तदपि प्रेम परतन्त्र सखिन संग रास रचावें ॥२६॥
बिबिधि वाटिका बिपिन रम्य उपबन मन भावन ।
ललित गिरिन के शिखर तहाँ विहरत जग पावन ॥२७॥

यहि बिधि बिपुल विनोद कीन तिन सँग रघुनन्दन ।
पूरन करि कामना दिये सब सुख रस रंजन ॥२८॥
लहि सब बिधि आनन्द सकल ललना अनुरागीं ।
विनय करैं बहु भाँति परम प्रेमामृत पागीं ॥२९॥
हे जग सुन्दर रूप रासि प्रीतम मन भावन ।
परम उदार समर्थ अमल यश त्रिभुवन पावन ॥३०॥
यद्यपि सम सब रहीं दैत्य सुत के आधीना ।
तदपि आपकी कृपा अदूषित आयम हीना ॥३१॥
यद्यपि दैत्य महान शक्ति शाली भट भारी ।
रच्छा सब बिधि करी आप की कृपा हमारी ॥३२॥
बल करि बरबस पकरि हमहिं राखा गृह माही ।
बहुरि निकट नहिं गयेउ छुयेउ हम सब को नाहीं ॥३३॥
मुग्धा हम सब सकल भाँति हे राजदुलारे ।
बड़े भाग्य मम रहे मिले तुम प्राण अधारे ॥३४॥
कोई पुण्य विशाल नाथ पद पंकज भ्रमरी ।
कीन हमहिं बरियाय रहीं बाला गन सिगरी ॥३५॥
हम सब के हिय माहिं प्रीति पावन प्रटगाई ।
याही से रसिकेश मिले निज कण्ठ लगाई ॥३६॥
निर्हेतुकी कृपालु प्रणत पालक रघुराई ।
निज पद पंकज प्राप्ति आपनी कृपा कराई ॥३७॥
यद्यपि हम सब भाँति रहीं साधन गुन हीना ।
तदपि आप करि कृपा मिले पिय परम प्रवीना ॥३८॥

हम सबको निज कृपा पात्र सब भाँति बनाई।
दियो सकल सुख स्वाद प्राणवल्लभ अपनाई ॥३९॥
हे मंगलमय मूर्ति मोह मल मूल नसावन।
यदि हम सब पर दया आप की हे मनभावन ॥४०॥
तो हम को विश्वास प्रवल सुनिये सुकुमारे।
जन्मान्तर में सदा होहु तुमहीं मम प्यारे ॥४१॥
तजि तुम्हरे पद कंज अनत मम मन नहिं जाई।
बनि दासी सब भाँति करैं निशिदिन सेवकाई ॥४२॥
सब विधि सेवौं चरण सतत तव आयसु मानौं।
जीवन प्राण अधार आप को सर्वस जानौं ॥४३॥
यह भी निश्चय मोहिं सुनहु रसिकेश सुघर वर।
नित्य प्रिया तव दिव्य शक्ति सुठिशील मधुर तर ॥४४॥
तिन सँग जब तब व्याह होइगो हे हृदयेश्वर।
लोकोत्तम गुण रूपवती मृदुचित सनेह घर ॥४५॥
जब वे करुणा मयी नाथ तुम्हरे घर अइहैं।
राज सिंहासन बैठि आप सँग आनन्द पैइहैं ॥४६॥
तब आश्रयाबलम्ब पाय निज चरण प्रहारा।
करिहैं वे न कदापि प्रवल विश्वास हमारा ॥४७॥
हम सब से ईर्षा दोष कवहूँ नहिं करिहैं।
तिरस्कार नहिं करहिं सदा उर आनँद भरिहैं ॥४८॥
क्योंकि आपकी प्रिया आप सम शील उदारा।
आश्रित पालक प्रणत जनन पर प्यार अपारा ॥४९॥

परम कृपामयि मूर्ति क्रोध हम पर नहिं करिहैं।
मम दोषन पर दृष्टि कदा वे भूलि न डरिहैं ॥५०॥
तव चरणन से नाथ कदा नहिं मोहिं हटैइहैं।
उनकी कृपा प्रसाद सदा हम आनँद पैइहैं ॥५१॥
हम सब हिय हर्षाय सतत उनके पद सेवैं।
उनकी कृपा कटाच्छ निरखि जीवन फल लेवैं ॥५२॥
हम सब को विश्वास प्यार हम पर वे करिहैं।
निज भगिनी सम सतत भावना उर में भरिहैं ॥५३॥
तुम दोउन के चरण कमल सेवा करि प्यारे।
पावेंगी हम सकल हृदय में मोद अपारे ॥५४॥
हे एकान्त प्रिय नाथ आप गुण निधि सर्वेश्वर।
सब निधि पूरण काम काम पूरक प्राणेश्वर ॥५५॥
मम चुगली भी कदा आप को कोइ सुनावे।
आप देहिं गे ध्यान मोहिं विश्वासन आवे ॥५६॥
टेढ़ी नजर कदापि आप मो कोन निहररिहैं।
यह मम दृढ़ विश्वास प्रेम हम सब पर करिहैं ॥५७॥
तुम दोउन को प्यार पाय हम सब सुख पैइहैं।
सुचि उच्छिष्ठ प्रसाद खाय अति आनँद लहिहैं ॥५८॥
असन विभूषण बसन सु जल तव प्रेम प्रसादा।
पाय सकल हम बाल लहैंगी हिय अह्लादा ॥५९॥
सेइ युगल पद कंज रहौं तव महल मझारी।
यहि विधि हे हिय हार हरषि हम होयँ सुखारी ॥६०॥

हम सब में कछु बाल अहैं गन्धर्व कुमारी ।
कुछ विद्याधर सुता कछुक किन्नरिन दुलारी ॥६१॥
यच्छ गुह्य अपसरा अमित गुण रूप उजारी ।
कई लच्छ वर सुता सुभग नख सिख सुकुमारी ॥६२॥
श्री कमलासम रूपशील माधुरी आदि गुन ।
प्रीतम तब रस पगीं परम चातुरी मुदित मन ॥६३॥
आदि सृष्टि से अद्यावधि जग में तन धारी ।
तव सम केहि को भाग्य आप ही कहहु बिचारी ॥६४॥
असनर को जगभयो जासु गृह में बहुनारी ।
सकल रूप गुणशील मयी अनुपम छबिवारी ॥६५॥
भूतल में नहिं सुन्यो कहीं ऐसो जो होई ।
प्रभु सम जाके प्रियँ आप सम अपर न कोई ॥६६॥
भयो न है नहिं होय कदा तुम सरिस पुरुष वर ।
आपहि आप समान रसिक जीवन धन हिय हर ॥६७॥
हे मदनाच्छ महान मदन मान्त्रिक तव रूपा ।
मधुर मूर्ति रस रूप अमल अनवद्य अनूपा ॥६८॥
हम सब मन्त्रित अंग सबहिं तुम निज बस कीना ।
प्रीतम प्राणअधार परम प्रेमामृत दीना ॥६९॥
हम सबने दृढ़ कियो यही निश्चय मनमाहीं ।
एक परात्पर पुरुष बरैं दूसर पति नाहीं ॥७०॥
पर रसिकेश महान मोहनी हम पर डारी ।
कियो हमहिं सर्वथा स्वबस यह कोतुक भारी ॥७१॥

याते निश्चय भयो आप ही पुरुष परेशा ।
एक अनादि अनूप परात्पर अमल अशेषा ।।७२।।
पुरुषोत्तम हम सकल रावरे सुकर विकाईं ।
जीवनधन प्राणेश कृपा कीनी अपनाईं ।।७३।।
निज कुल रूप समाज स्वजन सज्जन अनुकूला ।
वर्ग विमल वर बरण विधायक गुण सुखमूला ।।७४।।
बिसरे सब सर्वथा कदा सुधि आवत नाहीं ।
प्रीतम परम प्रवीन प्रीति पद पंकज माहीं ।।७५।।
यदि हम सब के संग आप सुखपावन चाहो ।
तो प्रसन्ता लखो सबनि की प्रीति निबाहो ।।७६।।
यदि यो बोलैं आप अहहिं हम राज कुमारा ।
चक्रवर्ति नृप सुवन सुयश जग माहिं हमारा ।।७७।।
तो क्यो विना तुमारि कृपा सुख स्वादन पैइहैं ।
हम तुमको दै दण्ड स्वबस करि सब सुख लैइहौं ।।७८।।
तो सुनिये हृदयेश होय यहि विधि सुख नाहीं ।
दण्ड दिये नायिका कभी भी हों बस माहीं ।।७९।।
यदि बोले कोइ पुरुष विना ही तियहिं रिझाये ।
दै तेहि दण्ड विशाल स्वबस करि रति सुख पाये ।।८०।।
तो नाहिन विश्वास विना तिय की रुचि पाई ।
पावै सुख कोइ पुरुष बात यह झूठ जनाई ।।८१।।
साधारण की कौन कहैं किन होय भुवनपति ।
दण्ड दिये कुल वती नारि निरखै न बिमल मति ।।८२।।

जब तक प्रिय नायिका प्यार भरि हँसि न निहारे।
तब तक भोग विलाश रमन रस व्यर्थ बिचारै ॥८३॥
यदि बोलें रसिकेश आप हमहीं तुम सब को।
लाये वन्दि छुड़ाय देहु याते सुख हम को ॥८४॥
तो यह भी नहिं उचित सुनहु मन हरन रसिकवर।
हे मन रंजन राज सुवन सुन्दर उदार तर ॥८५॥
हे अक्षय गुणसिन्धु अमृत सम सुखद सुपावन।
"सीताशरण" सनेह सने सज्जन मन भावन ॥८६॥
हे हिय हरन रहेश रमन रस रतन मधुर तर।
नायक नवल नवीन नेह पागे प्रमोद घर ॥८७॥
प्रीतम तव गुण रूप सकल बनितन बस कारी।
हिय आकर्षक सरस चरित तव अवध बिहारी ॥८८॥
प्रभु सम नाहिन अपर सुनहु हे रास रसिक वर।
कारण यही विशेष बिकीं हम सब तुमरे कर ॥८९॥
तव सौन्दर्य अपार सिन्धु सम सुखद सुहावन।
अति रमणीय सुवेश सतत परिकर मन भावन ॥९०॥
जिमि निज कला कलाप यक्ष सब के चित्त कर्षत।
तैसेहि तव सौन्दर्य चित्तबस करि रस बर्षत ॥९१॥
अधिक हौं मैं काह निरखि तव मधुर स्वरूपा।
नर मुनि मोहित होत रमण रति रस अनुरूपा ॥९२॥
हम अवला चित सरस हृदय अति मृदुल हमारो।
मन रंजन मन रमन मनोहर रूप तिहारो ॥९३॥

अहो चतुर चितचोर चपल चूड़ामणि छबिधर।
हम सब भईं बिमुग्ध निरखि तव रूप मधुर तर ॥९४॥
यहि बिधि वे सब बाल बचन रचना सनेह भर।
निज सु नित्य सम्बन्ध जनावहिं अमल सरस तर ॥९५॥
अखिल रूप सौन्दर्य सिन्धु सुख सागर नागर।
नटवर नवल किशोर परम रसबोर उजागर ॥९६॥
बे बाला रमणीय सहज संगीत विशारद।
जन्म सिद्ध सब कला निपुण विलसहिं जनुशारद ॥९७॥
स्वतः सुगन्ध शरीर सकल रामा अभिरामा।
सुन्दर सरस सनेस सनी सुचि सुखद सुबामा ॥९८॥
शुद्ध सुहावनि गिरा ज्ञान गम्भीर गुणाकर।
गावहिं गीत गुमान सान सौहार्द मोद भर ॥९९॥
रचहिं सुनत द्रुत ललित कलित कमनीय हीय हर।
सुनत मधुर मन मोद मगन मोहन मंजुल वर ॥१००॥

दो०--सुनहु सकल मोरे बचन, तुम सब परम प्रवीन।
रति रस सुख मोंहि दीजिये, हौं तुमरे आधीन ॥३॥

अति आकर्षित भये रमन रस रतन मोद घर।
उन सब के सँग रमत रमावत हिय उमंग भर ॥ १ ॥
बोले बचन बिशेष बिमल बिधु बदन बिलोकी।
मधुर मनोहर मोद सदन अनबद्य अशोकी ॥ २ ॥
ऐ प्रिय प्रिया प्रवीन परम प्रेमामृत सानी।
सकल सुलोचनि सुघर सरस सुन्दरि सुख दानी ॥ ३ ॥

हम सब को सम्बन्ध पुण्य को फल नहिं कीना ।
विश्व बिधायक बिधिहु हाथ यामें नहिं दीना ॥ ४ ॥
सुकृत सृजित सुख शीघ्र नष्ट होवत क्षण माहीं ।
बिन मम कृपा कटाक्ष याहि कोउ पावत नाहीं ॥ ५ ॥
स्वाभाविक सम्बन्ध कृपा से होय हमारी ।
साधन साध्य न होय करै किन जप तप भारी ॥ ६ ॥
मैं निर्हेतुकि कृपा करौं जेहि पर हर्षाई ।
परम अलौकिक अमल स्वाद सुख तब कोउ पाई ॥ ७ ॥
यह मम रूप अनूप शीघ्र कोउ पावत नाहीं ।
तुम सब पावन परम रमत हमरे सँग माहीं ॥ ८ ॥
हे मम प्रिया समूह सुनो सुख प्रद मम बानी ।
मुझ में स्वल्पहु भाव होत अति आनँद दानी ॥ ९ ॥
विफल न कबहूँ होत कल्प तरु से विशेष कर ।
सकल स्वाद सुखदान सुधा सम मधुर सरस तर ॥१०॥
मो महँ भाव न विफल होय वामे यह कारण ।
मैं परमेश्वर सकल जगत तारण को तारण ॥११॥

गुण ग्राहक मैं सतत करौं जेहि अंगी कारा ।
पुनि अनुचित हो जाय तबहुँ नहिं करौं प्रहारा ॥१५॥
सब से अति सामर्थ मोहिं में तदपि स्वजन पर ।
करि नहिं सकौं प्रहार अपर को करै देव नर ॥१६॥
नाहिन मो सम अपर सकल मोसे लघु अहहीं ।
याते मम जन सदा एक रस आनँद लहहीं ॥१७॥
जन को होत न हानि चहै दूषित हो जावै ।
पर न लखौं मैं दोष यदपि सो अति पछितावै ॥१८॥
जाको अंगीकार करौं फिर दोष न देखौं ।
यह मम सहज स्वभाव दृगन किन अवगुण पेखौं ॥१९॥
मम अंगीकृत स्वजन कदा अवगुण नहिं करई ।
संस्कार संयोग निबस कुश्चित पथ परई ॥२०॥
वाको अवगुण अमित नहीं दूषित करि पावैं ।
मेरी कृपा प्रसाद सतत अविचल पद जावैं ॥२१॥
जो मन वच क्रम सकल भाँति मेरो बनि जावै ।
मोहिं भोक्ता मानि भोग्य हो मो कहँ ध्यावै ॥२२॥
निज स्वभाव गुण देह सकल मुझमें अर्पण करि ।
सेवै हिय बिच चरण सदा अतिसय उमंग भरि ॥२३॥
सो मम हिय को सकल भाँति अपने बस करहीं ।
नासत कल्मष सर्व तासु मम पद चित धरहीं ॥२४॥
मुझ में स्वामी भाव करे जो कोई प्रानी ।
सब बिधि होवे सुखी होय मूरख या ज्ञानी ॥२५॥

तब तक पातक अछत मोहिं निज स्वामि न मानै।
जगत बासना बिषय माहिं अपनो चित सानै ॥२६॥
मेरे प्रति दृढ़ भाव न जब तक जाको होई।
वाके वश नहिं होउँ बन्धु किन होवै कोई ॥२७॥
प्रवल भावना डोरि बँधी मम पद में जाकी।
में वाके वश रहौं सतत महिमा अति ताकी ॥२८॥
यद्यपि हम निज प्रीति वान प्रेमिन पर छोहू।
करौं सदा अनुराग अमित नहिं कछु सन्देहू ॥२६॥
सकल भोग ऐश्वर्य केर हम ही एक स्वामी।
करौं विभाजन सतत सकल विधि अन्तरयामी ॥३०॥
जाके उर सुचि भाव न सो अपमान पात्र वर।
अथवा त्यागन योग नहीं संसय सकोच उर ॥३१॥
जिमि रेंड़ी को बृक्ष बृक्ष सम परत दिखाई।
पर केहि गिनती माहिं वाहि को पूजत जाई ॥३२॥
तिमि मेरे सब जीव भाव बिन निज नहिं मानौ।
भाव वान जो जीव वाहि अपनो करि जानौ ॥३३॥
यह मम सहज स्वभाव अस्तु तुम सब सुकुमारी।
मम अभीष्ट प्रद होउ बद्धमन आनँद कारी ॥३४॥
मन क्रम बचन सनेह सहित स्थित हो जाओ।
मम हिय की अभिलाष सकल सब भाँति पुजाओ ॥३५॥
प्राप्त भयो जो पूर्व अहै अबहीं पुनि आगे।
प्राप्त होहिं सुख स्वाद करौं रत्ता अनुरागे ॥३६॥

याते हो कटि बद्ध होउ सब सावधान चित ।
देहु बिबिधि सुख स्वाद मोहिं पगि रस मोरे हित ॥३७॥
जो तजि निज सुख स्वाद होति मेरे सुख तत्पर ।
नहिं स्वारथ की गन्ध करै सेवा सनेह भर ॥३८॥
तिनकी सब बिधि योग क्षेम मैं स्वकर सम्हारौं ।
सहौं विपति बहुभाँति तदपि नहिं वाहि विसारौं ॥३९॥
केवल पितु से डरौं एक यह ही भय भारी ।
वे मम भक्तमहान अहौं सुत आज्ञाकारी ॥४०॥
पितु आयसु शिर धरै पुत्र की इहै बड़ाई ।
आगम निगम पुराण माहिं सोइ धर्म कहाई ॥४१॥
धर्म सेतु मर्याद रखन हित मम अवतारा ।
पितु आयसु प्रतिपाल करौं कर्त्तव्य हमारा ॥४२॥
पितु आज्ञा प्रतिपाल करै सोइ पुत्र कहावै ।
वाकी कीरति कलित अखिल लोकन में छावै ॥४३॥
अस्तु धर्म रक्षार्थ पिता मम ऊपर आहीं ।
अन्य दूसरो कौन जाहि हम कदा डराहीं ॥४४॥
मोसे पर कोइ नाहिं सकृत मम भक्त बड़ेरे ।
जो मम लगि तजि विश्व सहहिं दुख बिबिधि घनेरे ॥४५॥
आशुतोष शिव सुखद पिता महँ विधि की दाया ।
तुल्य रूप कुल वयस आप सबको हम पाया ॥४६॥
सुचि सुभाव सुठि सरल सरस सब सुघर सुन्दरी ।
अति सुशील सुकुमारि सकल गुण गण मधि अगरी ॥४७॥

सब पुत्रन ते अधिक प्यार मो कहँ पितु करहीं ।
कारण यही बिशेष मोहिं लखि आनँद भरहीं ॥४८॥
यद्यपि सब सुत सतत पिता को प्राण पियारे ।
तदपि निरखि मम गात होत पितु अधिक सुखारे ॥४९॥
सुतन अभय सब भाँति करत पितु अनुदिन नीके ।
तदपि हमारे पिता देत सुख स्वाद अमीके ॥५०॥
स्वतः अनुग्रह अमित करत मो पर महँराजा ।
अखिल भूमि भूपाल भाल भूषित सिर ताजा ॥५१॥
जब चितचोर किशोर परम रस बोर मधुर स्वर ।
बोले बचन विनोद वलित अति ललित सुघर वर ॥५२॥
स्वजन सुखद सुठि सरल सकल सुषमा सुख सागर ।
प्रीतम परम प्रवीन प्रीति परतीति उजागर ॥५३॥
भक्त भक्ति भावना भजन ग्राहक उदार तर ।
सरस काम तरु काम केलि पूरक सनेह घर ॥५४॥
यद्यपि सतत स्वतन्त्र प्रेम परन्तत्र अमल चित ।
करूणा कृपा अगार निरत नितरहत सुजनहित ॥५५॥
परम अनुग्रह प्रेम सनी बानी सुख दानी ।
सुनि सब सुठि सुन्दरी सरस सुखसिन्धु समानी ॥५६॥
उपजेउ परम प्रमोद प्रीति पूरित सुकुमारी ।
पिय पद पंकज पकरि बाल बिधु बदन निहारी ॥५७॥
पुनि पुनि करहिं प्रणाम परम प्रेमामृत पागीं ।
काम केलि कमनीय करन हित अति अनुरागीं ॥५८॥

कम्पित सकल शरीर कण्ठ से बचन न आवत ।
मन बिह्वल दृग अश्रु हृदय में अति सुख पावत ॥५९॥
लपटीं पिय पद कंज मंजु में सब सुकुमारी ।
परमानन्द विनोद भरीं रस रूप उजारी ॥६०॥
खंजन मृग अरु मीन कमल कल लोचन वारी ।
सकल सुन्दरी सुघर प्रीति रस वर्धन हारी ॥६१॥
बिधु बदनी नागरी सकल शुक पिक मृद बैनी ।
प्रीतम मन बश करनि काम कौतुक सुख दैनी ॥६२॥
तब पिय प्रेम समेत सबहिं कर कंज उठाई ।
ललित भुजा आजानु मध्य गाहि कण्ठ लगाई ॥६३॥
निजमुख सुधापिवाय तिनहिं रसिकेश नेह घर ।
स्वयं अधर रस पानकरत अतिसय उमंगभर॥६४॥
प्रेमावेश बिशेष राजनन्दन रघुनन्दन ।
परिकर प्रीति प्रकाश करन कारक रस रंजन ॥६५॥
पगे परम रस स्वाद भये अनुरक्त रसिक वर ।
अति व्यसनी ज्यों करहिं केलि क्रीड़ा प्रमोद भर ॥६६॥
उन सब के प्रिय प्राण प्राण के आत्म सनेही ।
श्री अवनीश कुमार हेतु रस बस भे तेही ॥६७॥
देत अमल सुख स्वाद सबहिं सब बिधि रघुराई ।
पूरण काम उदार प्रीति प्रतिभा प्रगटाई ॥६८॥
जब उन सबने लखेउ भाव अति अमित अनूपम् ।
परसि चरण लगि कण्ठ कामिनी काम स्वरूपम् ॥६९॥

चूमहिं अमल कपोल लपटि हिय दै गलवाहीं।
करहिं केलि कमनीय कला कौतुक दर्शाहीं ॥७०॥
निज कोमल कर कंज कला कल कुशल नागरी।
कज्जल युत दृगअश्रु मुदित पोछहिं उजागरी ॥७१॥
निज सारी सुठि छोर मार्जन करि सुख पावैं।
पिय हिय हार बनाय हँसहि पिय काहिं हँसावैं ॥७२॥
प्रीतम प्रियन समूह सहित सुख सने प्यार पन।
पावत परमानन्द सकल सब भाँति मुदित मन ॥७३॥
लखि सब की रुचि प्रवल राजनन्दन रुचि पाई।
सावन मास पुनीत गयो सेवा में आई ॥७४॥
याते प्रियन समेत राजसुत हिय सनेह भर।
लीला चल गिरि शिखर मध्य विहरत रसि केश्वर ॥७५॥
निरखत जहँ तहँ दृष्य शृंग चढ़ि अति मनभावन।
पहुँचे झूलन कुन्ज परम सुचि सुखद सुहावन ॥७६॥
निरखेउ श्रावण मास परम सुन्दर सुखदाई।
सरस राग मल्हार गान ध्वनि परत सुनाई ॥७६॥
सघन नील घन विपुल संग बिद्युत दमकाई।
गर्जत अति मन हरन मधुर सुन्दर सुख दाई ॥७८॥
मनहुँ खलन लगि कुटिल दण्ड धारण प्रभु कीने।
मोर मचावत शोर निरखि छबि आनँद भीने ॥७९॥
मधुर मयूर महान मगन मन मोद समाये।
प्रति ध्वनि गूँजति चहूँ ओर नृत्यत मन भाये ॥८०॥

मनहुँ सन्त जन राम कुँवर की कीरति गावैं।
करत विमल गुन गान हृदय में आनँद पावैं ॥८१॥
अखिल अवनि भूपाल मध्य जिमि चक्रवर्ति वर।
आश्रित जन तन ताप हरत जिमि रघुवर छबिधर ॥८२॥
तिमि सावनघन सजल सतत मोरन सुखदाई।
मेटत ग्रीषम जन्य ताप आनन्द बढ़ाई ॥८३॥
जिमि रघुवर घनश्याम मधुर मूरति मोहन मन।
आश्रित जनपर कृपादृष्टि करि बृष्टि ज्ञान घन ॥८४॥
हरत तासु त्रय ताप ताहि करि पूरण कामा।
परम उदार समर्थ कृपानिधि मन अभिरामा ॥८५॥
तिमि सावन वर मास बर्षि घन सुन्दर वारी।
भूतल जल मय करत सकल जग होत सुखारी ॥८६॥
ग्रीषम को भय देन हेत नव धनुष महाना।
नभ में करत प्रकाश मधुर मन हरन सुजाना ॥८७॥
सर्बलोक अभिराम राम खल दल भय कारी।
हरत अखिल जग ताप ललित धनु करन सुधारी ॥८८॥
तिमि सावन घनमध्य धनुष वर परत दिखाई।
सकल लोक आनन्द हेत सुषमा प्रगटाई ॥८९॥
श्रावण शुक्ल सुतीज मध्य उत्सव सुख दाई।
मोहन मदन महान कियो अलिगन समुदाई ॥९०॥
नाना भाँति हिंडोल सजे सखियन हर्षाई।
नृत्यत भरि अनुराग गान गावत उमगाई ॥९१॥

अमल अनूप अनन्त मणिन मय माल बनाई ।
ललित हिंडोला माहिं सखिन भरि मोद लगाई ॥९२॥
उत्सव अमित प्रकार लहत आनन्द अपारा ।
नवल नायिकन नेह पगे पिय परम उदारा ॥९३॥
सो रजनी सुख रूप सकल सखियन मन भाई ।
झूलत प्रीतम संग अंग अंगन लपटाई ॥९४॥
मन्द मन्द हँसि हेरि प्राणधन गर भुज धारी ।
गावहिं गीत ललाम पिया मन आनँद कारी ॥९५॥
सुनि सुख सदन सनेह सहित सुठि सरस गान बर ।
पावहिं परमानन्द परम प्रीतम प्रमोद घर ॥९६॥
नव नारिन मुख चन्द्र प्रभा चहुँ दिशि छिटकाई ।
आनन अमित प्रकाश विपिन मधि रहेउ समाई ॥९७॥
प्रीतम भुजा विशाल सरस सखियन मन हारी ।
चित्त कर्षक धरि अंश अमित अलि भईं सुखारी ॥९८॥
कोमल कलित सु मधुर सरस स्वर रति रस वर्धन ।
प्रीतम मन वश करन अमित शुक पिक मद मर्दन ॥९९॥
गुंजित कुंज निकुंज मध्य अलिगन हर्षाई ।
झमकि झूलि झुलवाय पिया सँग रस बर्षाई ॥१००॥

दो०—परमानन्द प्रमोद पगि, प्रीतम प्राणाधार ।
रमत रमावत सखिन को, रस बश राजकुमार ॥४॥

झूलहिं झूला नेह पगीं नायिका नवीनी ।
प्रीतम प्रीति प्रकाश करहिं सब परम प्रवीनी ॥ १ ॥

करहिं केलि कमनीय कला कौतुक मनहारी।
झूमहिं भरि अनुराग निरखि पिय होत सुखारी ॥ २ ॥
दायक नयनानन्द विमल वाटिका सुभग तर।
रासस्थली अनेक सजीं सब विधि प्रमोद घर ॥ ३ ॥
मणिमय महल अनन्त अमल क्रीड़र विहार थल।
सुख सुषमा आगार सौज साजे अनेक भल ॥ ४ ॥
रासस्थल मनहरन रमन रमनी मन कर्षत।
पावत परम प्रमोद प्रियाँ प्रीतम हिय हर्षत ॥ ५ ॥
पूर्व कियो जो रास केलि कमनीय सरस तर।
तिनते रचना अधिक मधुर मोहन भावन बर ॥ ६ ॥
नायक नव नायिका परस्पर मन मोहन हित।
पूरित सेवासौज निरखि मोहित होवत चित ॥ ७ ॥
मणि मय दीप अनेक गन्ध नहिं लेश धूम तहँ।
कुंजन मध्य प्रकाश करैं अद्भुत अनूप जहँ ॥ ८ ॥
स्वर्ण रत्न मणि जटित अमित माला मन हारी।
रासस्थल मधि लसहिं बिबिधि रँग करत उजारी ॥ ९ ॥
मुक्तन तोरन लगे बनी झालर सुषमा कर।
पूरति सरस प्रकाश रास मण्डप सुन्दर वर ॥१०॥
यहि विधि सब गुणधाम रम्य रस मूर्ति मधुर तर।
रघुनन्दन रसिकेश सजे बर वेश सुघर वर ॥११॥
मनहुँ मनोज महान मधुर क्रीड़ा सुरंग थल।
लसत ललित तरु निकर सरस निरखत लागत भल ॥१२॥

उज्वल अमल अनेक भाँति वर बिछे बिछावन ।
मनहर परम ललाम महा सुषमा प्रगटावन ॥१३॥
मृदुतर सुपद सरोज सरस सेवन लायक भल ।
रचना रची अनेक भाँति अद्भुत रासस्थल ॥१४॥
निरखि सुथल रमनीय सखिन हिय रुचि पहिचानी ।
बोले राजकिशोर मधुर रस बोर सु बानी ॥१५॥
लखि तिनकी चातुरी कहत रसिकेश श्याम घन ।
सुनहु छबीली सकल मुदित मन मम प्यारी गन ॥१६॥
नृत्य गान संगीत मधुर वीणादि बजावन ।
जानत तुम सब भली भाँति मेरे मन भावन ॥१७॥
जन्म सिद्ध गुण खानि सकल तुम रूप उजारी ।
बिन ही सीखे पढ़े गान बिद्या अधिकारी ॥१८॥
देवसुता तुम सकल जन्मतः बिमल बुद्धि वर ।
सिखन अपेक्षा नहीं तुमहिं सब परम चतुरि तर ॥१९॥
यथा पदारथ पिसा बहुरि पीसो नहिं जाई ।
स्वाभाविक गुण वान नहीं सीखत गुण जाई ॥२०॥
गान कला कमनीय भली बिधि तुम सब जानत ।
हम सों नहीं दुराव करहु हम भल पहिचानत ॥२१॥
हे ममहिय अभिराम कमल नयनी मन हारी ।
अति सुकुमारी नेह पगीं सब रूप उजारी ॥२२॥
प्राणाधिक प्रियमोहिं सकल बिधि आनँद दानी ।
बिधु बदनी सुचि भाव भरित सब भाँति सयानी ॥२३॥

मम मन की अभिलाष करहु पूरन हर्षाई ।
नृत्य गान संगीत कला अनुपम दर्शाई ॥२४॥
यदि तुम सब यह कहहु अहैं हम सब अवलातन ।
तुम सर्वेश्वर अखिल भुवन भूषन उदार मन ॥२५॥
कहिये हम सब बाल कौन सी कला दिखावैं ।
तो यह उचित न होय सुनहु हम भल समुझावैं ॥२६॥
अहं भाव संयुत पुरुष मध्यापन माहीं ।
काम बासना कदा जीर्ण करिपावत नाहीं ॥२७॥
प्रथम अवस्था माहिं नहीं अभ्यास बनायो ।
प्रमदन पाले पढ़ेउ बिषय रस चखेउ चखायो ॥२८॥
बनि इन्द्रिन आधीन भयो आशक्त अधिक तर ।
तियन खिलौना बनेउ सदा निज हिय उमंग भर ॥२९॥
अस्तु करै क्रिन कष्ट किन्तु कामना न जाई ।
मदन व्यथा बलवान सदा तेहि हृदय जराई ॥३०॥
बाल सु योगी यथा सकल कामना बहावै ।
तथा पूर्व अभ्यास वान बिन श्रम गुण पावै ॥३१॥
याही बिधि तुम सकल सखी सब बिधि गुण खानी ।
जन्म सिद्ध संगीत कला कुशला सुख दानी ॥३२॥
जेहि मेंजो गुणहोइ कदा नहिं छिपत छिपाये ।
गुण को दिव्य प्रकाश होत लखि सबहिं लुभाये ॥३३॥
याते अब सब सखी हृदय अतिसय उमंग भरि ।
दीजै मोहिं आनन्द सरस रस रास मधुर करि ॥३४॥

यहि बिधि पिय बिधु बदन बिमल वर बचन रचन सुनि ।
सुधा बिनिंदिक सरस मधुर मन हरन हृदय गुनि ॥३५॥
हिय अति भईं प्रसन्न परम सन्तोष लहेउ मन ।
किन्नर सुर गन्धर्व यत्त पन्नग कन्या गन ॥३६॥
सजि नख सिख शृंगार नवल वर बसन बिभूषन ।
पिय हिय रस दातार परम पावनि निर्दूषन ॥३७॥
प्रीतम मन सन्तोष देन हित सकल नागरी ।
रंग रहस थल नृत्य करन प्रविसीं उजागरी ॥३८॥
पिय पद पद्म पराग वन्दि हिय प्रेम समेता ।
अति हर्षित सब भईं रँगी रस रंग सचेता ॥३९॥
प्रथम देव अरु गोप सुता करि नृत्य सुहावन ।
गावन लगी ललाम गीत प्रीतम मन भावन ॥४०॥
मृदु स्वर बाद्य बजाय बिपुल सुर गोप कुमारी ।
रासस्थल मधि करहिं रास लीला रुचिकारी ॥४१॥
एक ओर गोपन सुता एक ओर देव कुमारी ।
सिंहासन मधि लसत मध्य श्री रास बिहारी ॥४२॥
अखिल अवनि भूपाल मुकुट मणि चक्रवर्ति वर ।
तिनके सुत सुख सदन राम रसिकेश मोद घर ॥४३॥
अमल अनूप अनेक बसन भूषन अँग धारे ।
नृप किशोर चितचोर रूप रस परम उजारे ॥४४॥
अंग कान्ति कमनीय प्रभा छाई चहुँ ओरी ।
निरखहिं वाला बिपुल लसहिं जनु निकर चकोरी ॥४५॥

कर पंकज माधिलता ललित लीने रसिकेश्वर ।
सुमन सु पल्लव सहित लसत नटवर नागर वर ॥४६॥
सखिन समर्पित सरस सुवर बीरा मुख सोहत ।
रूप अनूप अपार अमित मन्मथ मन मोहत ॥४७॥
नवल नायिकन नेह पगे चितवनि अबलोकी ।
मद पूरित दृग घमि रहे पल सकत न रोकी ॥४८॥
सूक्ष्म सु कटि कमनीय परम रमनीय मधुर तर ।
अंश भुजा अति पुष्ट विभूषन लसत ललित वर ॥४९॥
चितवनि ललित रसाल वंक भृकुटी मन हारी ।
चूमति अमल कपोल अलक सुन्दर घुँघरारी ॥५०॥
मेचक कुन्चित केश सबनि मन मृगन फसावन ।
चित आकर्षक परम मोद प्रद अति प्रिय पावन ॥५१॥
अरुण अधर रस सदन सखिन मन चित ललचावन ।
चारु चरण मन हरन अरुण कल कंज लजावन ॥५२॥
दामिनि ज्यों दमकात दशन दाड़िम सकुचावन ।
बिमल बदन बिधु निरखि सखिन मनमोद बढ़ावन ॥५३॥
प्रथम सिंहासन मध्य बिराजत रहे रसिक वर ।
सखिजन जीवन प्रान परम आनन्द नेह भर ॥५४॥
नृत्यहिं भरि अनुराग सखी मधुरे स्वर गावैं ।
विपुल बिभूषन बाद्य बजत सुनि पिय सख पावैं ॥५५॥
सुनि तिनके स्वर ललित ललन लावन्य सुधासम ।
उठे हर्षि रस पगे प्रेम लम्पट उदार तम ॥५६॥

गान तान रस खान सुनत हिय अति उमंग भरि ।
ललना गनमधि लसत ललन अनुराग अम्बु सरि ॥५७॥
मनहुँ अमित दमिनिनि मध्य राजत श्यामल घन ।
सुनत गीत मनहरन परम रसमय अबोल बन ॥५८॥
बर्षन रस सुख स्वाद भये स्थित रसिकेश्वर ।
प्रीतम परम पुनीत प्रीति पगे प्रमोद घर ॥५९॥
निरखि नवेलिन नृत्य नेह नूतन नवीन वय ।
सुनत सरस संगीत सुधा सम सुखद सुपद जय ॥६०॥
श्रवण नेत्र मन मगन हृदय बिच परम उमंगा ।
मोहित भये विशेष मदन मनहर रस रंगा ॥६१॥
यहि बिधि सुषमा सदन रास मण्डल प्रकाश कर ।
सब आनन्द विभोर भये परिकर प्रमोद भर ॥६२॥
प्रीतम प्रियाँ प्रवीन परम प्रेमामृत पागे ।
करत सरस रस रास हृदय मन्मथ सर लागे ॥६३॥
अलीं अनूप अपार अमित लीला बिस्तारहिं ।
"सीताशरण" निहारि पिया मुखतन मन वारहिं ॥६४॥
देव कुमारी निकर परम कुशला मृग नैनी ।
प्रीतम प्रीति प्रकाश करन कारक सुख दैनी ॥६५॥
करहिं केलि कमनीय निरखि पिय अति हर्षावैं ।
"सीताशरण" सनेह सने सुठि स्वाद सु पावैं ॥६६॥
रासस्थल मधि होत ललित लीला सुखदाई ।
बाहर बारिद विपुल वन्यो तम कछु न दिखाई ॥६७॥

गर्जत मेघ कठोर होत घन घोर अपारा।
दामिनि द्युति दमकात भूमि पूरित जल धारा ॥६८॥
झिल्ली स्वर झन्कार भेक बोलत समुदाई।
पपिहा पिउ पिउ शब्द करत सुन्दर सुखदाई ॥६९॥
बर्षत जल अति जोर शोर दश दिशि में छायो।
अन्धकार घन घोर मोर मन मोद बढ़ायो ॥७०॥
अनअधिकारिन श्रवण मध्य यह परम मधुर स्वर।
परै नहीं यहि हेतु रची रचना रसिकेश्वर ॥७१॥
प्रभु पद पावन प्रीति परम प्रेमा भक्ती करि।
चाखैं यह रस रास अमल अनुपम सनेह भरि ॥७२॥
प्रभु पद पंकज प्रवल प्रेम जिन के हिय नाहीं।
हरि हर विमुख अधर्म निरत भरमत जगमाहीं ॥७३॥
तिनके कहँ अस भाग लखहिं यह मधुर रास रस।
सकल सुमंगल मूल परम पावन उदार जस ॥७४॥
यह रसाल मनहरन शब्द ते कहँ सुनि पावें।
परम अभागी बिषय विबस नाना दुख ध्यावें ॥७५॥
याही से घननिकर वर्षिजल घोरशब्द करि।
अतिसय तिमिरबिनाय करत सेवा उमंग भरि ॥७६॥
सुखद हिंडोलसुकुंज सरस सावन जहँ आयो।
नृत्यगीत बहुवाद्य बजत आनन्द समायो ॥७७॥
बाहर गर्जत मेघशोर पूरति चहुँओरी।

प्रभुपद सेवा करन हेतकरि शुभ्र प्रकाशा ।
आयो रहित कलंक विमल बिधु भरेउ हुलासा ॥७९॥
यहनहिं प्राकृतचन्द्र अलौकिक अमल सुहावन ।
दिव्य मधुर मन हरन रास लीला सर सावन ॥८०॥
चदि सुधातु को अर्थ सबहिं अह्लाद प्रदायक ।
नाम सार्थक करन हेत गयो जहँ रघुनायक ॥८१॥
याही बिधि श्री रामचन्द्र पद कंज प्रेम भरि ।
कुमुद कुसुम सुचि सरस लिये सौरभ झकोर झरि ॥८२॥
आये श्रीयुत पवन मन्द गति अति सुख छाये ।
उड़त सुगन्ध झकोर सबनि मन मोद बढ़ाये ॥८३॥
निज सु प्रियन कर कलित कला संगीत मधुर तर ।
सुनत नवल रसिकेश राजनन्दन सनेह घर ॥८४॥
निरखत नृत्य रसाल हृदय अति आनँद पावत ।
"सीताशरण" सनेह शील पर बलि बलि जावत ॥८५॥
यद्यपि अखिल भुआल मुकुट मणि चक्रवर्ति सुत ।
तदपि प्रेम परतन्त्र नटत सखियन सँग सुख युत ॥८६॥
लखि तव नृत्य अनूप सुखद अद्भुत मन भावत ।
बनि मुनि जग मन मधुप चखन हित रस ललचावत ॥८७॥
बर्षत अमल अकाश सरस सुचि सौरभ भारी ।
पावत परमानन्द सकल परिकर मनहारी ॥८८॥
अब श्री सूत सुजान करत शंका सुख दाई ।
रघुनन्दन को नृत्य करब अनुचित कहलाई ॥८९॥

समाधान पुनि करत सुनहु सब मुनि समुदाई।
सदा स्वतन्त्र परेश ब्रह्म व्यापक रघुराई ॥९०॥
धर्म सेतु मर्याद यदपि रक्षक रघुनन्दन।
तदपि प्रेम परतन्त्र करत क्रीड़ा रस रंजन ॥९१॥
जो अनीह अज अगुन अमल अनवद्य कहावत।
प्रेम भक्ति परतन्त्र देह धरि चरित दिखावत ॥९२॥
ऐसेहिं परिकर प्रेम बिबस सुठि रास रंग करि।
देत सबहिं सुख स्वाद अमित बिधि हिय उमंग भरि ॥९३॥
जग के नृत्यक सकल स्वसुख हित नृत्य न करहीं।
लोभ बिबस सुख देत आन को आनन्द भरहीं ॥९४॥
पर अवधेश किशोर परम रस बोर सु छबिधर।
नृत्यत गावत स्वसुख हेत रसिकेश सुघर वर ॥९५॥
नृप कुमार सुकुमार सकल संगीत बिशारद।
रसिया रास रसज्ञ भनत महिमा मुनि नारद ॥९६॥
साजे सुठि गन्धर्ब राज वर वेश अनूपम्।
नृत्यत भरि अनुराग सखिन सँग रुचि अनुरूपम् ॥९७॥
रास बिलाश अपार सकल बिधि जातन नीके।
रमत नायिकन मध्य देत सुख स्वाद अमीके ॥९८॥
नृत्यगान संगीत भेद सब नीके जानत।
याते सखियन संग नृत्य करि अति सुख मानत ॥९९॥
जे स्वानन्द बिशेष भोक्ता भोग बिबिधि वर।
नायक गण सिरताज परम अधिराज मधुर तर ॥१००॥

दो०--परतम परम परेश प्रभु, पुरुष प्रसिद्ध पुरान ।
सीताशरण सनेह निधि, सब सुख सिन्धु सुजान ।।५।।

याते श्री रघुवीर धीर करि नृत्य रसाला ।
रमत रमावत सखिन रास रंजित नृप लाला ।। १ ।।
रूप रसिक रघुनन्द परम स्वच्छन्द नेह घर ।
"सीताशरण अधार प्यार वर्धन उदार तर ।। २ ।।
याते नृत्यब रामकुँवर को अनुचित नाहीं ।
पाइय परम प्रमोद निरखि छबि निजहिय माहीं ।। ३ ।।
अन्य पुरुप सब नृत्य करत दूसर सुख लागी ।
उनसे निज सुख चहत परम स्वारथ रस पागी ।। ४ ।।
निज लीला विस्तार हेतु प्रेमिन सुख दाई ।
नृत्यत राजकुमार स्वजन मन मोद बढ़ाई ।। ५ ।।
अखिल अबनि अवनीश मुकुटमणि चक्रवर्ति वर ।
तासु तनय कमनीय रूप रस सार सुछबि धर ।। ६ ।।
सकल भोग ऐश्वर्य पूर्ण प्रेमिन मन रंजन ।
नृत्यत राजकिशोर भूप नन्दन अभिनन्दन ।। ७ ।।
सतत स्वतन्त्र परेश प्रीति परतन्त्र सखिन सँग ।
पावत परमानन्द प्यार पागे अमंग रँग ।। ८ ।।
नृत्यत नवल किशोर बिबिधि वर भाव दिखाई ।
गावत गीत रसाल सखिन हिय रस उमगाई ।। ९ ।।
करत चेष्टा अमित तियन मन आनँद कारी ।
लहत परम रस स्वाद रसिक मणि अवध विहारी ।।१०।।

परमानन्द प्रमोद भरीं सब सखी सयानी ।
पगीं परम रस रंग पिया मन आमँद दानी ।।११।।
परमानन्द समूह ब्रह्म रस निधि रघुराई ।
एकाकी रस स्वाद कहहु कौने बिधि पाई ।।१२।।
याते सखियन हृदय भरेउ अति रस आनन्दा ।
तब तिन सँग रमि लहत स्वाद सुख श्री रघुनन्दा ।।१३।।
सखी सकल रस केलि कला कुशला प्रवीन अति ।
प्रीतम सुखहित निरत सतत सब बिधि निर्मल मति ।।१४।।
भये परम आशक्त मधुर मूरति रघुराई ।
रस बस अधिक बिभोर मुग्ध लीला दर्शाई ।।१५।।
निज ऐश्वर्य स्वरूप माहिं यह रस नहिं पायो ।
पगे परम माधुर्य सखिन मन प्रेम बढ़ायो ।।१६।।
जिमि कोइ सुखद पदार्थ बनाये नेह बढ़ाई ।
अपर पदारथ मिले स्वाद कछु अधिक जनाई ।।१७।।
जिमि सुचि सूप बनाय सुरभि घृत देत मिलाई ।
बढ़त तासु सुठि स्वाद सोइ जाने जो खाई ।।१८।।
बिन हूँ घृत सुठि सूप यदपि लागत सुख दाई ।
तदपि परत घृत सुरुचि बढ़त अति मोद बढ़ाई ।।१९।।
ऐसेहि सब रस सिन्धु सकल आनन्द प्रेम घर ।
रघुवर राजकिशोर सखिन चितचोर मधुर तर ।।२०।।
अवला अमित अनूप रूप गुन शील नेह निधि ।
तिन सँग रमि रसिकेश लहत सुखस्वाद बहुतबिधि ।।२१।।

चूमत अमल कपोल अधर रस चखत चखावत।
गाढ़ालिंगन करत सखिन रस रंग डुबावत ॥२२॥
अरस परस सुख स्वाद लहत सबविधि पिय प्यारी।
करहिं परम रस केलि कला कौतुक मन हारी ॥२३॥
यह रस स्वाद अनूप नहीं एकाकी पावैं।
याही से रसिकेश सखिन सँग रास रचावैं ॥२४॥
कोटिन कन्या केलि कला सम्पन्न सुभग तर।
एक एक सँग एक एक रस लहत रसिक वर ॥२५॥
जैसे घृत पय मध्य अछत सब जानत अहहीं।
तदपि बिना तेहि मथे कदा कोइ घृत नहिं लहहीं ॥२६॥
ऐसेही आत्मा मध्य आत्मा नन्द रस।
व्याप्त रहे सर्वत्र लहत अनुभव बिचार बस ॥२७॥
जिमि पय मन्थन बिना कदा कोइ घृत नहिं पावै।
तिमि बिनु बिमल बिचार आत्मसुख नहिं दर्शावै ॥२८॥
जिमि पय को जन करिसु क्रिया घृत लेत निकारी।
तिमि सखियन सँग बिबिध केलि करि रास बिहारी ॥२९॥
लहत आत्म सुख अमल सकल विधि होत सुखारी।
देत तिनहिं सुखस्वाद रमन करि मन चित हारी ॥३०॥
जिमि घृत अन्न पदार्थ पाय अति स्वाद बढ़ावत।
तिमि रघुवर करि केलि अमित अति आनँद पावत ॥३१॥
चुम्बन करि मुख चन्द्र अमल अँग आलिंगन करि।
पावत अति सुख स्वाद हृदय बिच अति उमंग भरि ॥३२॥

जिमि केवल घृत पान करत कछु फीका लागत ।
तिमि केवल आतमानन्द नीरस कहलावत ॥३३॥
याही से रसिकेश श्याम सुन्दर मन रंजन ।
करत सखिन सँग सरस रास लील रघुनन्दन ॥३४॥
संम्यक विधि रस रास योग्य केवल श्री रघुवर ।
सकल वेद संगीत कला कल कुशल सुभग तर ॥३५॥
यहि से भूतल स्वर्ग आदि लोकन मधि नाहीं ।
कोई श्री रघुवीर सरिस जो रास रचाहीं ॥३६॥
आप सकल जग ईश सुअवतारन अवतारी ।
करत रास स्वच्छन्द सखिन सुख देत अपारी ॥३७॥
काहू बश नहिं होत स्वबश करि सकल जहाना ।
"सीताशरण" अधार रमत रसिकेश सुजाना ॥३८॥
तजि निज रास रसाल अन्य देखन नहिं जावत ।
सकल महीपति मध्य आप सिरताज कहावत ॥३९॥
त्रिभुवन भूषन रूप आप केहि के बश होवें ।
सब रसिकन मणि मुकुट रास पुनि काको जोहवें ॥४०॥
सब बिधि आप स्वतन्त्र निरंकुश रहत हमेशा ।
ज्ञान भक्ति ऐश्वर्य मगन माधुर्य परेशा ॥४१॥
सकल प्रकार अतर्क तर्क करि सकै न कोई ।
अस नहिं कोउ सामर्थ वान अंकुश करे जोई ॥४३॥
याते तजि सब तर्क पान करि सदा प्रेम रस ।
पावे परमानन्द हृदय ध्यावत अनूप यस ॥४४॥

तेहि रासस्थल मध्य सखिन मन हर रघुराई।
करत केलि कमनीय कला कौतुक सुखदाई ॥४५॥
प्रभु को पावन अंग परस गाढ़ालिंगन लहि।
करि मुख चुम्बन प्यार सहित कर कंज मंजु गहि ॥४६॥
देत अमित सुख स्वाद रास रंजित रसिकेश्वर।
निरखत नयनन नेह पगे मृदु हँसि हृदयेश्वर ॥४७॥
यदपि सखिन मन बढ़त प्रेम आनन्द अपारा।
तदपि सहचरिन हृदय होत नहिं काम विकारा ॥४८॥
नृत्य गान संगीत मगन सब अति सुख पावहिं।
परम प्रेम रस सार लहत किमि काम सतावहिं ॥४९॥
याते मदन महान सकुच युत सखिन चरणतल।
लोटति तजि निज मान सान पावत सुन्दर फल ॥५०॥
नृत्यहिं सखि भरि मोद देह की सुधि बिसराई।
लगि लगि चरण प्रहार मदन मद तजि घबराई ॥५१॥
जब नख सिख सुन्दरीं प्रेम उन्मत्त होयं अति।
गावहिं पिय गुणग्राम उमगि हियअति निर्मल मति ॥५२॥
तब उन सबके मुख मयंक अतिसय छबि पावें।
लखि पिय हिय ललचाय स्वकर सुठि पान पवावें ॥५३॥
अतिसय प्रेमावेश देहकी सुरति भुलावें।
नूपुर किंकिणि आदि बिभूषण खसि गिरि जावें ॥५४॥
प्रीतम परम प्रवीन परम प्रेमामृत पागे।
निज कर कंजन बाँधि बिभूषन अति अनुरागे ॥५५॥

चारु चपल चितचोर चतुर चूड़ामणि मन हर।
सुन्दर सुखद सनेह सने सब संग रसिक वर ॥५६॥
निज कर नूपुर बाँधि चरण सेवत हर्षाई।
मानत परमानन्द परम रस बस सुख पाई ॥५७॥
नाशामणि मन मुदित सम्हारत श्री रघुनन्दन।
माला सुठि सुरभाय करत सखियन मन रंजन ॥५८॥
कबहूँ सुरुचि समेत गुहत चोटी सुखपाई।
गूँथत सुमन सनेह सहित उर आनँद छाई ॥५९॥
पहिरावत निज हाथ बसन अनुराग बिबस पिय।
रस मय अंग बिलोकि परम सुख स्वाद लहत हिय ॥६०॥
सुन्दर अति रमनीय सखिन मनहर तन माहीं।
अतर सुगन्ध लगाय लाल मन में हर्षाहीं ॥६१॥
केहु सखि के वर भाल मध्य रचि तिलक लगावत।
चन्दन चर्चित अंग हृदय अतिसय सुख पावत ॥६२॥
मानत आपहिं धन्य धन्य अति आनँद पागे।
प्रीतम प्रीति प्रकाश करत सखि सँग अनुरागे ॥६३॥
यह सब लीला ललित सकल सज्जन सुख कारी।
करत कृपा रस रूप सूत यों गिरा उचारी ॥६४॥
कबहुँ रसिक शिरमौर राजनन्दन सुखपाई।
मन मोहन मन रमन सखिन हँसि कण्ठ लगाई ॥६५॥
धरि अंशन भुज प्रेम पगे प्रीतम हर्षाई।
परसि पयोधर परम प्यार प्रगटत रघुराई ॥६६॥

रसमय लीला निरखि सखी गन हिय सकुचाई।
हँसि पिय बदन बिलोकि रहीं आनन्द समाई ॥६७॥
तब पिय पंकज बदन कमल लोचन रघुनन्दन।
मन्द मन्द हँसि हेरि करत सखियन मन रंजन ॥६८॥
रस बर्धक महराज कुँवर सत्कार परम करि।
सखि मुख मण्डल स्वेद विन्दु पोंछत उमंग भरि ॥६९॥
सखी चूमि कर कंज हँसत अति आनँद पाई।
देवैं आशिर्वाद जयति जय कहि रस छाई ॥७०॥
इमि लीला रमनीय सखिन हिय आनँद कारी।
करत कृपा सुख सिन्धु प्रेम बस रास विहारी ॥७१॥
पुनि रासस्थल मध्य परम अभिराम श्याम घन।
रघुनन्दन चितचोर लसत रस बोर मुदित मन ॥७२॥
इन्द्रनील मणि सरिस श्याम सुचि सुभग शरीरा।
नवल नागरिन नेह पगे रस निधि रघुवीरा ॥७३॥
अंग कान्ति कमनीय प्रभा पूरित चहुँ ओरी।
मनहुँ रमा गल हार मध्य गिरि मेरु लशोरी ॥७४॥
तिमि नवला गन मध्य लसत रसिकेश सुभग तर।
परम प्रेम रस रूप मधुर मूरति सुन्दर वर ॥७५॥
कबहुँ परम सौभाग्यवती मनहरन ललामा।
नवल नायिका अंश भुजा धरि पिय सुख धामा ॥७६॥
एक हस्त करताल देत मृदु सरस मंजु स्वर।
गावत गीत रसाल लाल लावन्य सुधा तर ॥७७॥

सकल ईश सिरताज रसिक शिरमौर राज सुत ।
नृत्यत सखियन संग हृदय अतिसय गमंग युत ॥७८॥
कबहुँ नृत्य मिस रासमध्य निज मुकुट रतन सों ।
सखिन निरांजन करत हृदय अति प्यार सुमन सों ॥७६॥
स्वर में स्वरहिं मिलाय सखिन सँग गावत पिय जब ।
झुकत मुकुट प्रतिकाश परत सखियन सुख घर तब ॥८०॥
छावत छटा अपार अमल अनुपम मन भावन ।
जब पिय सखियन संग नृत्य करि लागत गावन ॥८१॥
निज मस्तक से सखिन शीश जब देत हिलाई ।
कबहुँ शूच्म कटि छुद्र घंटिका देत बजाई ॥८२॥
कहुँ कंकण कमनीय कबहुँ नूपुर झनकारें ।
सखियन देत कँपाय बिभूषण शब्द उचारें ॥८३॥
अमित चेष्टा करत सखिन रस रंग समाने ।
देत परम सुख स्वाद राजनन्दन हर्षाने ॥८४॥
प्रगटावत अनुराग अमल अनुपम सुख दाई ।
बर्षत रति रस रंग जंग घमशान मचाई ॥८५॥
हृदय हरन हँसि हेरि भक्त बासना मिटावन ।
भरत हृदय रसरास प्रेम पावन प्रगटावन ॥८६॥
राजिव लोचन सखिन पकरि जब देत हिलाई ।
रुनझुन किंकिणि आदि बजत नूपुर सुखदाई ॥८७॥
तेहि लीला को ध्यान करत सज्जन रसज्ञ जन ।
काँपत तिनके हृदय आदि मस्तक प्रमोद मन ॥८८॥

ध्यावत लीला ललित होत रोमांच कंप तन ।
अश्रुपात सात्विक सुचिह्न प्रगटत आनँद मन ॥८९॥
भूलत वाह्य वृत्ति परम आनँद मंगल मन ।
पावत पावन प्रेम लहत सुख स्वाद सरस तन ॥९०॥
नाहिन कछु आश्चर्य निरखि लीला सुखदाई ।
सूखे हृदय समाधि मगन मुनि जात बिकाई ॥९१॥
ब्रह्मानन्द बिहाय रास लीला रति मानत ।
चारि पदारथ मुक्ति आदि को अति लघु जानत ॥९२॥
जे मुनि मुक्ती हेतु करत साधन समुदाई ।
तेउ लखि लीला ललित बिनागथ जात बिकाई ॥९३॥
त्यागि मुक्ति की आश होत यहि रस में तत्पर ।
पावत परमानन्द हृदय मैं मधुर सरस तर ॥९४॥
उनके अनुभव माहिं मुक्ति अति फीकी लागत ।
सरस रास रस जानि सतत याही रस पागत ॥९५॥
जे ध्यावत रस रास मुक्ति को जानि पिसाची ।
पगत मधुर रस सतत हृदय सब भाँति अयाची ॥९६॥
प्रभु पद पंकज प्रीति परम जाके जिय माहीं ।
सकल भोग ऐश्वर्य मुक्ति सब फल नहिं चाहीं ॥९७॥
अष्ट सिद्धि नव निदि सबहिं अति वाधक जानी ।
त्रण सम त्यागत जासु सुमति उज्वल रस सानी ॥९८॥
जिमि पिय भरि अनुराग रमत सखियन सँग माहीं ।
तिमि मृग सावक नैनि पगीं पिय रस हर्षाहीं ॥९९॥

नवल नायिका वृन्द मोद भरि प्रीतम संगा।
करहिं केलि कमनीय रँगीं सब रति रस रंगा ॥१००॥

दो०–प्रीतम प्रिया प्रवीन अति पागे परम प्रमोद।
सखियाँ साजन सब सतत साने सकल बिनोद ॥६॥

नाशा मणि शिर रत्न अवलि मधि करत प्रकाशा।
पिय आरति सखि करहिं भरीं हिय परम हुलाशा ॥ १ ॥
हँसि हेरत पिय ओर दशन दामिन ज्यों दमकत।
पूरित परम प्रकाश रास मण्डल अति दमकत ॥ २ ॥
मानहुँ सुभग कपूर सदृश पुष्पांजलि देहीं।
सरस मधुर मुख चन्द मन्द हँसि आनँद लेहीं ॥ ३ ॥
जब हो रस मद मत्त मन्द हँसि पिय मुख जोहैं।
करहिं मधुर रस बात सुनत प्रीतम मन मोहैं ॥ ४ ॥
दशनन प्रभा कपूर सदृश छावत चहुँ ओरी।
पुष्पांजलि पिय काहिं देन मानो रस बोरी ॥ ५ ॥
कापि नायिका नेह पगी उत्तम कुल वारी।
गावति राग मल्हार मधुर मंजुल सुकुमारी ॥ ६ ॥
कोमल कलित कलोल करति मूर्छना ग्राम युत।
माद्र मध्य अरु तार सप्त स्वर सहित नेह नुत ॥ ७ ॥
सुनि सुषमा सुख सदन श्याम सुन्दर सुशील अति।
रघुवर परम प्रसन्न भये अति सरल अमल मति ॥ ८ ॥
जब सो वामा मधुर सरस षड्जाति सप्त स्वर।
गावत गीत ललाम तरल लोचना हृदय हर ॥ ९ ॥

सुनि पिय परम प्रसन्न होत नटवर नव नागर ।
निज गलहार उतारि प्यार पगि रूप उजागर ॥१०॥
पहिरावत पिय परसि पयद पुनि प्रेम पगे हिय ।
वाको ललकि लगाय लाल लम्पट लोभित जिय ॥११॥
सब विधि तेहि अपनाय समर्पण होत तासु कर ।
भेटत कण्ठ लगाय ललन रस बस उमंग भर ॥१२॥
निरखत मधुर मयंक सु मुख दृग दृगन मिलाये ।
नृप किशोर चित चोर परम रसबोर जनाये ॥१३॥
कोइ प्रमदा पिय प्रेम पगी प्रीतम प्रिय करनी ।
मृदुस्वर वाद्य बजाय प्राण जीवन मन हरनी ॥१४॥
मणिमय नुपुर मधुर मधुर स्वर शब्द निकारे ।
सुनि पिय परम प्रसन्न प्रीति पगि राज दुलारे ॥१५॥
सखियन सुख दातार रसिक मणि मन हर मूरति ।
करि कटाक्ष कमनीय लखत तेहि सखि की सूरति ॥१६॥
वह चितवनि रस भरित जौन सखि पर परि जाई ।
पावहि परमानन्द हृदय रस निधि उमगाई ॥१७॥
कोइ सजनी अनुराग वती प्रीतम रस पागी ।
मुख सुगन्ध करि घ्राण ललकि पिय के हिय लागी ॥१८॥
कोइ करि नृत्य रसाल सजन मन मोद बढ़ावें ।
नवल नायिका कापि गान करि पियहिं रिझावें ॥१९॥
कोइ दृग भरि अनुराग सैन संकेत जनाई ।
प्रीतम हिय सुख सजति करति रस बात सुहाई ॥२०॥

निज मृदु ललित रसाल भुजा धरि पिय गल माहीं ।
निरखति बदन मयंक हँसति पिय हिय हर्षाहीं ॥२१॥
कोइ मृग नयनी मानवती करि मान मधुर तर ।
बैठी बदन छिपाय मनावत वाहि रसिक वर ॥२२॥
मानति नहिं सो वालबिनय करि ताहि मनावत ।
अज अशेष अखिलेश अमल आनन्द हिय पावत ॥२३॥
केहु सखि से करि मान आप वैठत रिसियाई ।
सो सजनी सनमानि मनावति प्रीति जनाई ॥२४॥
मानत नहिं जब रसिक शिरोमणि सो घबराई ।
वन्दति चरण सनेह सहित वर विनय सुनाई ॥२५॥
तब हँसि पिय चितचोर वाहि निज कण्ठ लगाई ।
चाखत सुधा समूह अधर रस प्यार बढ़ाई ॥२६॥
भुज से भुज लपटाय नयन सों नयन मिलाई ।
हिय सों हिया लगाय रमत रस निधि सुख पाई ॥२७॥
कोइ सुठि सुमन सम्हारि सजति शैय्या सुखदाई ।
सोवत सजन सनेह सहित सुख सिन्धु समाई ॥२८॥
कोइ सखि नवल हिंडोल रचति प्रीतम मन भावनि ।
झूलति पियहिं झुलाय झमकि अतिसय अनुरागिनि ॥२९॥
कापि सुमन सुचि माल बिरचि पिय को पहिरावति ।
मूरति मधुर निहारि हर्षि आरती उतारति ॥३०॥
त्रण तोरति भरि मोद होति पिय पर बलिहारी ।
पावति परमानन्द हृदय अति होत सुखारी ॥३१॥

कोइ नागरी नवीन नेह पगि लागि कान तर ।
बोलति बचन बिनोद वलित रस निधि सनेह भर ॥३२॥
कोइ दोउ भुजन मझारि राखि हँसि कण्ठ लगावे ।
करि कटाक्ष कमनीय काम बासना जगावे ॥३३॥
बोलति बचन सनेह सने दृग दृगन मिलाई ।
चमति अमल कपोल कला कौतुक दिखलाई ॥३४॥
चाखति अधर रसाल लाल मन मोद बढ़ाई ।
रमति पिया के संग रंग रस जंग मचाई ॥३५॥
लखि पिय परम प्रवीन ताहि सुख स्वाद चखाई ।
राजत रसिक नरेश राज नन्दन रघुराई ॥३६॥
यद्यपि काम कलोल सखी बहु भाँति दिखाई ।
सीताशरण विकार रहित बिलसत नृपराई ॥३७॥
कोइ बिधु बदनी विरह हरन वर बचन सुनाई ।
मनहुँ पियहिं हँसि देति अमल औषधी पियाई ॥३८॥
कोइ भ्रू बंक कटाक्ष करतिं अति सय रस माती ।
देखति कछु संकेत हृदय में अति हर्षाती ॥३९॥
कोइ कर कंज कँपाय कला कुशला कल कामिनि ।
कहति कछुक कमनीय बचन पियसन अभिरामिनि ॥४०॥
कोइ नितम्बिनी हास्य मगन पिय पीठ हटाई ।
पावत परमानन्द आन सखि पुनि लै आई ॥४१॥
बहुरि करति वर बिनय अहो प्रिय कान्त मधुर तर ।
परम मृदुलता सींवं नृपति सुत रूप रसिक वर ॥४२॥

चक्रवर्ति महाराज आत्म प्रिय भुवन बिभूषन ।
सुभग सकल गुण सिन्धु सरल सब भाँति अदूषन ॥४३॥
नाथ सरिस गुण वान अन्य जग में नहिं कोई ।
वर्णत यश मुनि निकर महाँ महिमा नहिं गोई ॥४४॥
रास श्रमित रसिकेश आप करि कृपा विराजें ।
हम सब बाला बृन्द सौज सेवा की साजें ॥४५॥
कोइ रमनी स्वर मृदुल सरस प्रिय वचन उचारति ।
निरखि निकाई नीक अपनपौ पिय पर वारति ॥४६॥
सुभग सुखद उपधान अमल अस तरन अनूपम ।
बोलति बचन विशिष्ट सुतन निरुपाधि स्वरूपम ॥४७॥
हे पिय परम प्रवीन आप सुषमा सुख सागर ।
कपट रहित अनवद्य देव पूजित गुण आगर ॥४८॥
सदा एक रस अमल परम रमनीय रसिक वर ।
अति उदार कमनीय प्रीति वर्धक सनेह घर ॥४९॥
सुन्दर आसन राजि परम शोभा सरसाइय ।
प्रीतम प्राण अधार प्रेम रस पान कराइय ॥५०॥
सुनि तेहि की वर विनय प्रीति ग्राहक रघुनन्दन ।
राजे सुषमा सदन मदन मद हर मन रंजन ॥५१॥
युगल परम सुकुमारि वाल बैठीं पिय पासा ।
प्रीतम चरण सरोज अंक रखि सहित हुलासा ॥५२॥
सेवन लगीं सनेह सहित प्रिय मधुर बचन वर ।
कहहिं प्रीति संकलित ललित भरि हास्य सरस तर ॥५३॥

सुचि सुन्दर सुख ऐन सुनत शारद सकुचाई।
परमानन्द प्रवाह परीं रसधार बहाई ॥५४॥
निज प्रेमामृत सरित सुजल सरि दीन लजाई।
भये प्रसन्न उदार नवल नायक रघुराई ॥५५॥
कोइ सखि रत्नन भार बिमल बेंणी के भारन।
मणिमय भूषन बिबिधि सजे मुक्तन मणि हारन ॥५६॥
शूक्ष्म सुकटि कमनीय भार परि गई झुकाई।
तासु पयद पिय मर्दि दियो सुख स्वाद अघाई ॥५७॥
तेहि मन कियो बिचार भयो पिय को श्रम भारी।
कोटि कोटि कन्दर्प दलन वर रूप निहारी ॥५८॥
लागी पंखा करन परम आनँद जियपाई।
गावहि प्रीतम रूप शील गुण हिय हर्षाई ॥५९॥
पुनि अनवधि आनन्द जलधि सम रास सुभगतर।
पागहिं प्रीतम प्रिया परम प्रेमामृत रुचि भर ॥६०॥
पुनि रामागण बिपुल रास रसिया घनश्यामहिं।
सब नायक मणि मुकुट मधुर मनहर अभिरामहिं ॥६१॥
भुज वक्षस्थल माहिं ललित चन्दन सुख कारी।
उदयाचल गिरि प्रसव सखी लेपत रुचिकारी ॥६२॥
बहुरि चपल चख चितय चतुर चितचोर सुनयनी।
पावहिं पिय अनुराग सकल सखि सुमुखि सुबयनी ॥६३॥
पुनि बालागन बिपुल दिव्य सुचि सुभग सयानी।
झारी बिपुल गिलास सुकर लीने हर्षानी ॥६४॥

सुचि सुगन्धमय सुजल अमल कर कंज मंजुतर ।
उज्वल मुख पद पद्म प्रछालत हिय उमंग भर ॥६५॥
मनहर मूर्ति रसाल दया सागर प्रिय पावन ।
अखिल लोक अभिराम राम परिकर मन भावन ॥६६॥
पुनि पति पावन पाद प्रीति पागीं प्रिय वामा ।
अनघा सब अनवद्य अमल नखसिख छबि धामा ॥६७॥
पिय मुख कंज पराग पान हित अति अनुरागीं ।
मधुप पराग पवित्र नेह निदरहिं बड़भागीं ॥६८॥
अमल कमल मकरन्द पान निन्दा करि कामिनि ।
पिय मुख कंज मरन्द पियहिं सब मन अभिरामिन ॥६९॥
बहुरि विपुल वर वाम बहुत बिधि असन रसनमय ।
सुचि सुगन्ध सम्पन्न मधुर मन हरन सुधामय ॥७०॥
अति कोमल सब रोग सोग नाशक रुचि कारी ।
प्रीतम प्राण अधार योग्य भरि पात्र सुखारी ॥७१॥
बिंजन बिबिधि प्रकार विमल वर पात्रन भरि भरि ।
विपुल विभाग बनाय सखी सुन्दर विनोद करि ॥७२॥
पिय आगे धरिधार सकल अति आनँद पावहिं ।
जेंवत नवल किशोर प्रशंसा करि हर्षावहिं ॥७३॥
पगे परम रस प्रेम सहित भोजन करि रघुवर ।
करि अचवन मन मुदित पान पावत विनोद घर ॥७४॥
बीरी बिमल बनाय देहिं सखि अमल कमल मुख ।
सरस सुगन्ध लगाय करहिं सत्कार देहिं सुख ॥७५॥

सकल भाँति सनमानि सखी सब सुभग सयानी ।
करि प्रीतम को तृप्त मुदित मन हिय हर्षानी ।।७६।।
बनिता बृन्द बिनोद सहित हिय भरि अह्लादा ।
पावत प्रेम समेत पिया को ललित प्रसादा ।।७७।।
पगीं परम अनुराग परस्पर खाहिं खवावहिं ।
निज निज करन जिमाय स्वयं हर्षहिं हर्षावहिं ।।७८।।
करि अचवन मन मोद भरीं वामा अभिरामा ।
रमणी परम प्रवीन रहस रस मगन ललामा ।।७९।।
आत्मरमण प्रिय प्राणनाथ प्रियतम रघुनन्दन ।
सब बिधि सुषमा सदन मदन मद हर भव भंजन ।।८०।।
तिनको पावन प्रीति पगीं पद कंज मंजु वर ।
आईं निकट समूह सकल वनिता उमंग भर ।।८१।।
प्रीतम परम प्रवीन प्रेम पगि सकल सखिन को ।
प्रमुदित पान पवाय लगावत कण्ठ अलिन को ।।८२।।
अतर करावत घ्रान मन्द हँसि सबहिं हँसावत ।
रंजित अति अनुराग अमल रस धार बहावत ।।८३।।
करत प्यार बहु भाँति सबहिं रसिकेश सुजाना ।
पावत परमानन्द सखिन सुख देत महाना ।।८४।।
सखियन मुख कमनीय अमल कल कमल समाना ।
दामिनि ज्यों दमकात दशन दाड़िम सकुचाना ।।८५।।
रंजित सुचि ताम्बूल दशन आभा अधिकाई ।
प्रीतम प्रीति प्रकाश हँसनि वर लसनि सुहाई ।।८६।।

पुनि पगि पिय अनुराग सकल नवला अलबेली।
झूलन बिच पधराय पियहिं सुठि सुभग सहेली ॥८७॥
झूला झमकि झुलाय झाँकि झुकि गाय गीतवर।
करहिं केलि मन हरन कला कुशला सनेह घर ॥८८॥
सामवेद से अधिक प्राण जीवन गुन ग्रामा।
गावहिं गान रसाल मधुर स्वर सुखद ललामा ॥८९॥
पिय कीरति गुण रूप शील कुल केर बड़ाई।
अति द्रुत सुपद बनाय सखी गावत उमगाई ॥९०॥
करहिं प्रशंसा भूरि भूप सुत सुनि सुख मानहिं।
होत सबहिं अनुकूल सकल सखियन सनमानहिं ॥९१॥
यद्यपि नित अनुकल सकल कामिनि मन रंजन।
करत रसिक शिर मौर प्रेम पूरित रघुनन्दन ॥९२॥
तदपि प्रीति की रीतिं सतत नित नवल दिखावहिं।
हृदय हरन हँसि हेरि सखिन मन मोद बढ़ाबहिं ॥९३॥
नख सिख करि शृंगार प्रथम मन हरन ललामा।
झूलन बिच पधराय बहुरि हर्षित सब वामा ॥९४॥
स्तुति करहिं सनेह सनी सब सखी सहेली।
पावहिं परमानन्द हृदय बिच सकल नवेली ॥९५॥
कोइ सहचरी ललाम मधुर गम्भीर हृदय हर।
गावहिं गीत सप्रेम सरस सुठि सुखद मोद भर ॥९६॥
चपल चतुर चितचोर सखी प्रीतम बश करनी।
गाय गान रस खान पिया को मन चित हरनी ॥९७॥

सब विधि भये प्रसन्न राजनन्दन उदार तर ।
सदा प्रेम परतन्त्र रहत रसिकेश सुघर वर ।।९८।।
सो सजनी सुख सनी हृदय बिच करति बिचारा ।
मो पर अति अनुकूल सतत पिय ममगलहारा ।।९९।।
प्रीतम परम सनेह सने सखियन रस पागे ।
अद्भुत कौतुक केलि करत अतिसय अनुरागे ।।१००।।

दो०-अज अनन्त अखिलेश जो, अगुन अखण्ड अनूप ।
सीताशरण सनेह वश, रघुवर मधुर स्वरूप ।७।।

देत अमल आनन्द सबहिं रघुनन्द द्वन्द हर ।
पल पल नव नव स्वाद देत रसिकेश सुघरवर ।। १ ।।
सखिन भुलाय सप्रेम राम रघुवंश हंश घन ।
पावत अति सुख स्वाद सरस नागर प्रवीन मन ।। २ ।।
झोंका जोर लगाय हँसत प्रीतन सुख ऐना ।
सुकुमारी सखि डरहिं सिसकि बोलत प्रिय बैना ।। ३ ।।
हे, हे, जीवन प्राणनाथ हिय हार हमारे ।
झोंका जोर न देहु रसिक लम्पट सुकुमारे ।। ४ ।।
दीजै झोंका सरस मधुर मन हरन सुघर वर ।
सुकुमारी हम सकल सखी सुनिये सनेह घर ।। ५ ।।
सुनि तिनके प्रिय बचन अधिक भयभीत निहारी ।
झूलन बिहँसि रुकाय मृदुल चित अवध विहारी ।। ६ ।।
सब बिधि अनघ अकाम अमल अनुपम गुन ग्राहक ।
पूरक भाव विनोद सिन्धु निज जन दुख दाहक ।। ७ ।।

निकट पहुँचि हिय हर्षि नेह युत सखि मन रंजन ।
करन हेत रसिकेश श्याम सुन्दर मद गंजन ॥ ८ ॥
दोउ निज भुजा रसाल ललकि सखियन गल डारी ।
विलसत विमल बिनोद बिबिधि बिधि सखि सुखकारी ॥ ९ ॥
करत विहार अपार बिपुल बिधि राज दुलारे ।
रघुनन्दन मन हरन सरस सुन्दर सुकुमारे ॥१०॥
रमि रमाय सुख स्वाद देत सखियन चित चोरत ।
अज अशेष अनवद्य अमल दृग सों दृग जोरत ॥११॥
पुनि पिय परम प्रवीन काम पूरक रसिकेश्वर ।
वने परम परतन्त्र प्रीति वश अति अखिलेश्वर ॥१२॥
यद्यपि सदा स्वतन्त्र एक रस अनघ अकामा ।
सीताशरण तद्यपि सखिन रति रस वश रामा ॥१३॥
करत केलि कमनीय सखिन सँग राजकुँवर वर ।
हंश वंश अवतंश ज्ञान घन सरस मधुर तर ॥१४॥
परम प्रेम परतन्त्र सखिन कल अमल कपोलन ।
परसत पयद सनेह मगन बोलत प्रिय बोलन ॥१५॥
रचत सुचित्र विचित्र पत्र मकरी मयूर वर ।
मीन लता लावन्य राजनन्दन सनेह भर ॥१६॥
ललित अलक मन हरन विरचि मृदु कुसुम सुहावन ।
गूँथत राजकिशोर सखिन मन मोद बढ़ावन ॥१७॥
प्रगटत अति चातुर्य चतुर चूड़ामणि मन हरन ।
कौशल कला दिखाय सखिन चित चोरत छबि धर ॥१८॥

भरत भावना भव्य भाव भूषित रघुनन्दन।
प्रगटत प्रीति प्रकाश प्रेम पूरित रस रंजन ॥१६॥
लखि पिय की चातुरी चपल सखि चंचलता तजि।
निरखति परम विमुग्ध बनी अपने हिय में लजि ॥२०॥
निज कौशल अभिमान त्यागि पिय सुछबि निहारी।
सीताशरण सनेह सहित तन मन सब वारी ॥२१॥
पुनि पिय परम प्रवीन राजनन्दन अभिनन्दन।
चपल चतुर चितचोर रास रसिया रस रंजन ॥२२॥
प्रेमावेश विशेष सखिन गुण रूप निहारी।
लावण्यता सुशील नेह सरलता बिचारी ॥२३॥
पावत परम प्रमोद प्रेम पूरक प्रिय नागर।
मन मोहन हिय हरन मदन मद मथन प्रभाकर ॥२४॥
काव्य कला कमनीय कुशल कौशिला कुमारा।
नर भाषा में रचेउ काव्य सुचि सुधा सुसारा ॥२५॥
अति द्रुत सखिन सुनाय दियो आनन्द अपारा।
मधुर हास्य रस मगन कला निधि नृपति कुमारा ॥२६॥
सखि सुनि निज गुण रूप शील शोभा सुख पाई।
उपजेउ अति संकोच लाज बश शीश झुकाई ॥२७॥
परम हास्य रस भरित काव्य कमनीय मधुर तर।
लखि पिय की चातुरी सकल सखियाँ लज्जित उर ॥२८॥
वदत बिमल वर बैन सूत सुचि सुधा समाना।
सावधान चित सुनहु निकर मुनिवर मति माना ॥२९॥

यह नहिं कुछ आश्चर्य निरखि रघुवर चतुराई।
अलिगन विस्मित भईं न यह प्रभु की प्रभुताई ॥३०॥
जासु कण्ठ कमनीय अंश से अमित भारती।
प्रगटहिं सीताशरण सकल जग काज सारती ॥३१॥
सरस्वती कृत सिद्ध कण्ठ जाको नहिं होई।
स्वयं सिद्ध कल कण्ठ कला निधि रघुवर सोई ॥३२॥
याते रस माधुरी चतुरता निरखि अली गन।
अतिसय विस्मित भईं मोद पावहिं अपने मन ॥३३॥
निज हिय हर्षित सकल सखी पिय कृपा अमृत लहि।
पावता परमानन्द हृदय बिच भरि उमंग रहि ॥३४॥
पिय गुण शील स्वभाव रूप माधुरी नेह वर।
रचहिं काव्य कमनीय कला संयुत सु मंजु तर ॥३५॥
बोलनि चलनि सु मिलनि हँसनि अति मधुर सरस तम।
रचि द्रुत सुपद सुनाय सखी सोहहिं सब अनुपम ॥३६॥
नीलाचल गिरि सरिस श्याम सुन्दर रघुनन्दन।
सखियाँ सुधा समान काव्य विरचहिं रस रंजन ॥३७॥
पगीं पिया के प्रेम प्राण जीवनहिं सुनाई।
बरसहिं परमानन्द सुजल निज हिय हर्षाई ॥३८॥
सुनि तिनके बर बैन छन्द कमनीय सुहावन।
पावत परम प्रमोद प्रेम पूरित मन भावन ॥३९॥
सखिन चातुरी देखि ब्यास बहु करत बड़ाई।
मेघ माल सम लसत नवल बनिता समुदाई ॥४०॥

चहुँ दिशि ते वर बचन बुन्द बर्षहिं हर्षाई ।
सुनत चतुर चितचोर रसिक मन हर रघुराई ॥४१॥
यहि बिधि बिपुल बिनोद मोद युत सखी सयानी ।
प्रीतम संग हिंडोल साल बिलसत सुख सानी ॥४२॥
दिबस मध्य यहि भाँति सखिन रस रंग रँगाई ।
पुनि रजनी मधि करत नवल लीला सुखदाई ॥४३॥
प्रियाँ प्रवीन विनोद भरीं प्रिय पिय हित लागी ।
लीने छत्र अनूप कंज कर अति अनुरागी ॥४४॥
युगल सखी मन हरन चँवर दोऊ दिशि लीने ।
अपर सखी कर व्यजन लिये निरखहिं रस भीने ॥४५॥
इमि सब साज समाज सौज सेवा कर साजे ।
निशा मध्य बन माहिं श्याम सुन्दर वर राजे ॥४६॥
बिचरत बिपिन बिनोद हास रस रास मगन सब ।
भाव भरे अलि बृन्द मध्य बिलसत नटवर तब ॥४७॥
अह्लादिनी स्वरूप सकल रामा अभिरामा ।
देत तिनहिं सुख स्वाद परम रघुवर सुख धामा ॥४८॥
पावत परमानन्द बिबिधि बिधि स्वयं रसिक वर ।
सखियन जीवन प्राण एक रस अमल भाव भर ॥४९॥
याहि बिधि बिपुल बिहार करत निशि दिवस सरस तर ।
नवल नायिकन नेह पगे प्रीतम प्रमोद कर ॥५०॥
सखी सलोनी सुभग सकल नख सिख सुकुमारी ।
श्रम निद्रा तजि लसत ललन सँग रूप उजारी ॥५१॥

सब आनन्द विभोर पिया मुख चन्द्र चकोरी ।
नृत्यत भरि अनुराग लहत सुख स्वाद अथोरी ॥५२॥
पियत पिया को अधर सुधा अतिसय हर्षाई ।
याते करत सु रास नृत्य श्रम ास न जाई ॥५३॥
मृदु हँसि जब रसिकेश सकल सखियन तन हेरहिं ।
हृदय परम रस भरत अखिल श्रम दूरि निवेरहिं ॥५४॥
करि कटाक्ष कमनीय बुद्धिमन चित बस कीने ।
परमानन्द सनेह स्वाद सुख सब विधि दीने ॥५५॥
जासु नाम श्रम शोक मोह भव मूल नसावन ।
सकल सुमंगल देत करै पावन को पावन ॥५६॥
मरतहुँ निकसे राम होय किन सब अघ खानी ।
लहै नित्य साकेत शास्त्र श्रुति सन्तन बानी ॥५७॥
जिनहिं राम रसिकेश हर्षि निज कण्ठ लगावैं ।
कहहु तिनहिं केहि भाँति नीद श्रम शोक सतावैं ॥५८॥
जो भरि हिय अनुराग पियत पिय अधर सुधारस ।
वरणत सुन्दर श्याम स्वयं जिन को उज्वल यश ॥५९॥
तिनहिं नीद नहिं लगै कदाहू श्रम न जनाई ।
नाहिन अति आश्चर्य होय यामे कछु भाई ॥६०॥
पुनि पिय प्राण अधार प्रीति पालक सुषमाकर ।
पूरक प्रेम परत्व प्रभा पूरित उमंग भर ॥६१॥
नख सिख सुमन श्रृँगार सकल सखियन को साजत ।
नृप किशोर चितचोर प्रेम लम्पट अति राजत ॥६२॥

तैसेहिं सखिन सनेह सहित साजन शृंगारे।
सुमन विभूषन बसन बिरचि तन माहिं सुधारे ॥६३॥
पिय को करत शृँगार सखिन तन छबि छहराई।
ध्यान मगन श्री सूत कहत उपमा हर्षाई ॥६४॥
मानहुँ जंगम देव वृक्ष सी छटा लखाई।
मंजुल मधुप मरन्द हेत गुन्जत इह लाई ॥६५॥
अथवा मधुर मनोज मंजु मन्दिर मन भावन।
तासु सुमन सम्पन्न सुभग वर वेलि सुहावन ॥६६॥
सुरपति प्रभु रुचि जानि करत बर्षा हर्षाई।
मणिमय मंजुल महल मध्य राजत रघुराई ॥६७॥
दिव्य भव्य नित नव्य भवन स्फटिक मणिन मय।
तिन मधि सखिन समेत लसत नटवर सुमनन मय ॥६८॥
छज्जा अति छबि दार मध्य बहु नवल नवेली।
बिहरत बिपुल बिनोद सहित मन हरन सहेली ॥६९॥
यदपि अमित प्रासाद दिव्य मन हर प्रिय पावन।
तदपि सखिन संयुक्त जाय बाहर मन भावन ॥७०॥
बिहरत हास्य बिनोद मगन रसिकेश स्याम घन।
करत केलि कमनीय विपुल बालन संग मुदबन ॥७१॥
शिर पर श्वेत सुधार सुधा सम सुखद सुहावन।
हँसि हँसि धारण करत स्वयं रस निधि उदार मन ॥७२॥
कर गहिं सखिन सनेह सहित धारण कर बावत।
ब्रह्म सच्चिदा नन्द कन्द हर्षत हर्षावत ॥७३॥

भीजत स्वयं सनेह सने सब सखिन भिजाई ।
बिहरत बिपुल बिनोद पगे रघुवर सुख पाई ।।७४।।
रति रस बर्धन हेतु सखिन सँग अनुपम लीला ।
करत रसिक शिर मौर राजनन्दन रस सीला ।।७५।।
बने प्रेम परतन्त्र नवल नायक रघुनन्दन ।
यद्यपि सदा स्वतन्त्र एक रस आनँद कन्दन ।।७६।।
जब निज मन में कीन सखिन यहि भाँति बिचारा।
सब बिधि मेरे वशी भूत पिय परम उदारा ।।७७।।
प्रभु रत्तक सर्वज्ञ सखिन मन की गति जानी ।
नील कमल सम सुभग श्याम सुन्दर सुखमानी ।।७८।।
लीला ललित विचारि कीन प्रभु रस वर्धन हित ।
तरु तमाल मणि नील सरिस अँग अति उदार चित ।।७९।।
किंचित निशि अविशेष जलद अति सघन सुहावन ।
अन्धकार घन घोर मध्य पिय रस बरसावन ।।८०।।
सखियन दृष्टि बचाय शीघ्र तरु पर रघुनन्दन ।
चढ़े चपल चितचोर चतुर परिकर मन रंजन ।।८१।।
मेघघटा घनघोर हाथ नहिं परत दिखाई ।
छिपे सु तरु पल्लवन मध्य पिय मन हर्षाई ।८२।।
अतिसय तिमिर महान मदन मद हर रघुराई ।
जब नहिं देखे सखिन हृदय में सब घबराई ।।८३।।
जहँ तहँ खोजन लगीं सकल सखि कोकिल बैनी ।
जब नहिं मिलत रसेश भईं ब्याकुल मृग नैनी ।।८४।।

तब पिय परम प्रबीन प्रीति वर्धन प्रिय पावन ।
इक सखि लीन बुलाय प्रेम लम्पट मन भावन ।।८५।।
याते बाढ़ै सखिन हृदय में क्रोध अपारा ।
तब लीला बिस्तार होय पिय कीन बिचारा ।।८६।।
नील कमल दल सरिस श्याम सो सखी सयानी ।
प्रीतम मन वश करनि सतत पिय को सुख दानी ।।८७।।
तेहि सखि सहित परेश परम रस बस रघुनन्दन ।
नीलाम्बर तन ढाँकि छिपे प्रभु सब जग वन्दन ।।८८।।
मेचक कुंचित केश ललित अतिसय मन भावन ।
आनन पर लहरात मनहुँ अलि बृन्द सुहावन ।।८९।।
सो नायिका नवीन नेह युत पिय तन माहीं ।
लपटी ललित तमाल मध्य जिमि बेलि सुहाहीं ।।९०।।
अलकावलि रमनीय सरस प्रीतम हिय हरनी ।
विलसति वेनी बिमल सुकटि तट तक सुख करनी ।।९१।।
मानहुँ नागिनि नेह भरी लहरति हर्षावति ।
राजकिशोर रसज्ञ हृदय बिच रस बर्षावति ।।९२।।
अलक विभूषित सुभग अमल आनन अति अनुपम् ।
रमनीया अति सूक्ष्मांगिनी सुख रस रूपम् ।।९३।।
सारी श्याम सुहात सुतन मधि पियतनद्युति ज्यों ।
छिपत सखी सँग श्याम यथा वटपार छिपत त्यों ।।९४।।
वाको पिय अति प्यार सहित निज कण्ठ लगाई ।
चूमत अमल कपोल अधर रस चखि सुख पाई ।।९५।।

सो सखि रति रस पगी लगी पिय के हिय माहीं ।
दोउ भुज गर लपटाय तजति पल भर को नाहीं ॥९६॥
पिय मुख कंज मरन्द सरस सौरभ सुख दाई ।
तेहि हित मधुप अनन्त जुरे गुंजत हर्षाई ॥९७॥
तब तहँ ते उठि चले रसिक मन हर हृदयेश्वर ।
अपर कुंज में जाय दुरे सखि युत रासेश्वर ॥९८॥
तहहुँ भ्रमर गण संग महाँ गुंजार मचाई ।
चले तुरत सोउठावँ छाड़ि रस निधि रघुराई ॥९९॥
जहँ जहँ जात रसेश राजनन्दन नटवर घन ।
तहँ तहँ सँग अलिवृन्द करत गुंजार मुदित मन ॥१००॥

दो०—व्यापक व्याप्य विभूषितवर, वदन् विमल बुध वेद ।
अमल अनन्त अखण्ड अज, विधिहु न पावत भेद ॥८॥

तब मन अति भय खाय गये चम्पा बन माहीं ।
कबहुँ जेहि बनमध्य मधुप भूले नहिं जाहीं ॥ १ ॥
सो सुन्दरी सुहाग भरी सौभाग्य वती अति ।
परम मृदुल अँग सकल सरल अतिसय निर्मल मति ॥ २ ॥
तासु ललित कर कंज मंजु गहि श्री रघुनन्दन ।
चलत चपल चितचोर बेग युत सखि मन रंजन ॥ ३ ॥
अतिसय पथ श्रम पाय भई मुर्छित सो बाला ।
सुकुमारता सु सीव निरखि व्याकुल नृप लाला ॥ ४ ॥
रति रस रमण बिशेष तासु इच्छा मन माहीं ।
तदपि रसिक शिर मौर रमत वाके सँग नाहीं ॥ ५ ॥

धर्म सेतु मर्याद सुपथ शिच्छक रघुराई।
त्रिभुवन भूषन भूप भवन मधि प्रगटे आई ॥ ६ ॥
यद्यपि परम प्रवीन प्रेम पूरक प्रिय नागर।
नटवर नवल किशोर रूप रसशील उजागर ॥ ७ ॥
निजमन करत बिचार ब्रह्म वेला अब आई।
याते रतिरस रमण करब अनुचित कहलाई ॥ ८ ॥
परब्रह्म परमार्थ तत्व चिन्तन की बेला।
अस्मिन काल नितान्त रहे सर्वदा अकेला ॥ ९ ॥
अन्य कर्म यहि काल माहिं अनुचित कहलाई।
जग शिच्छण हित राघवेन्द्र लीला दिखलाई ॥१०॥
न तरु अखिल जग नाथ अमल अनबद्य एक रस।
अजअनीह अति अनघ अगुन गुन निधि उदार यस ॥११॥
परतम परम परेश प्रेम पूरक प्रतिभाकर।
ज्ञाता ज्ञेय गुनज्ञ ज्ञान घन विमल विभाकर ॥१२॥
सत् चित् आनँद रूप भानु कुल कमल दिवाकर।
"सीताशरण" अधार प्रीति पालक सुषमाकर ॥१३॥
यह प्रभु केर स्वभाव उभय प्रतिकूल धर्म को।
करत नहीं शांकर्य कदा सुचि असुचि कर्म को ॥१४॥
सुपथ प्रदर्शक राम परम अभिराम काम हर।
जग अनुगामी होत सतत प्रभु कृत उर में घर ॥१५॥

तब तक उदय दिनेश निरखि प्रीतम सनेह घर ।
सकल नायिकन मध्य लखत आपहिं सुजान वर ॥१७॥
पर बन देव प्रसाद छिपे सखि देखि न पावैं ।
यद्यपि अति सामीप्य अछत पिय सखि दुख पावैं ॥१८॥
खोजत बाला बृन्द बिपुल जहँ तहँ श्रम पायो ।
पर प्रीतम नहिं मिले हृदय अतिसय घबरायो ॥१९॥
भानु उदय पश्चात् पाय अवसर हर्षाई ।
निद्रा कामिनि कलित देह बिन प्रभु ढिग आई ॥२०॥
सोवत राजकिशोर परम रस बोर हृदय हर ।
सब विधि पूरन काम सखिन अभिराम सुभग वर ॥२१॥
अन्वेषहिं नायिका सकल नूतन रस पागी ।
मिलत न जब रसिकेश हृदय विरहानल जागी ॥२२॥
खोजत खोजत थकीं त्यागि आशा दुखपाई ।
अतिसय करुणा भरीं नलिन लोचन जल च्वाई ॥२३॥
विरह व्यथा अति अकथ करहिं रोदन सुकुमारी ।
वृद्धा धाई एक पाय अवसर पग धारी ॥२४॥
सकल सखिन समुझाय सरस साधन वतलायो ।
पिय दर्शन यदि चहो बचन मम हृदय बसायो ॥२५॥
हरतालिका महान सुब्रत मन मोद समेता ।
कीजै सहचरि बृन्द मिलहिं पिय कृपा निकेता ॥२६॥
जैसे प्रीतम बिन महाँ दुख तुम सब पावत ।
तैसेहि पिय चितचोर होहिं गे हिय पछितावत ॥२७॥

कोमल चित रघुवीर प्राप्ति को योग लगाई।
मिलत स्वजन से सतत बिसद कीरति जगछाई ॥२८॥
प्रभु प्रेरिता सुभाग्य वती धात्री ढिग आई।
व्रत की बिधि बतलाय सबहिं सन्तोष कराई ॥२९॥
गमनी अपर सुठावँ सखिन तेहि दिन व्रत कीना।
गौरी पूजन कीन प्रेम युत सुठि वर लीना ॥३०॥
श्री हर प्रिया प्रसन्न भईं बोलीं हर्षाई।
तुम सब संसय तजहु मिलहिं द्रुत सजन सिहाई ॥३१॥
निराजला व्रत कीन दिवस पुनि निशि में जागीं।
गौरी पूजन कीन सकल प्रेमामृत पागीं ॥३२॥
करि विधि वत स्नान बैठि पारण हित सखियाँ।
कवल लिये कर कंज दाह उर बर्षत अँखियाँ ॥३३॥
निरखहिं पिय की राह सकल नायिका नवेली।
कान्त मिलन की चाह प्रवल दुख लहत सहेली ॥३४॥
पारण किमि करि सकैं कान्त में मन चित सानो।
अतिसय भईं विभोर देहको भान भुलानो ॥३५॥
यहि विधि परम सनेह पगीं बाला गन सारी।
तजि निन्द्रा तब उठे रसिक मणि रास विहारी ॥३६॥
लखि तिनकी अति दीन दशा प्रीतम सुख सागर।
कृपा सिन्धु रमनीय मृदुल चित शील उजागर ॥३७॥
प्रणय प्रणाली विज्ञ सरस विज्ञान सिन्धु सम।
आश्रित हित मुद भरन प्रेम पूरित उदार तम ॥३८॥

स्वल्प प्रेम जो करै आप वापर बिकजावत।
यह लीला करि सखिन हृदय सुचि प्रेम जगावत ॥३९॥
प्रेम निवाहन हार प्रीति वर्धक प्रिय नागर।
नटवर नवल किशोर रास रसिया गुन आगर ॥४०॥
देखा सखिन रसेश बिरह सर मगन अपारा।
लहत निरति सय खेद सकल मग लखहिं हमारा ॥४१॥
तब पिय परम रसज्ञ पठाईं सोइ सुकुमारी।
प्रथमहिं गये लिवाय जाहि श्री बिपिन बिहारी ॥४२॥
सो बाला अति बिज्ञ रहस पंडिता प्रबीनी।
वाक्य कला कल कुशल परम रमनी रस भीनी ॥४३॥
गई सखिन के पास वाहि लखि सकल सहेली।
बाहर कोप दिखयाय बचन बोलहिं अलबेली ॥४४॥
ऐ सजनी बतलाय गई तू कहाँ अकेली।
हम सब के सौभाग्य दुराये तुही नवेली ॥४५॥
मम जीवन धन प्रान गई एकान्त लिबाई।
एकाकी करि रमण सबहिं दुख सिन्धु डुबाई ॥४६॥
अति द्रुत देय बताय कहाँ मम प्राण अधारे।
देखे बिन मुख चन्द्र जरत सब अंग हमारे ॥४७॥
सखि तू परम प्रवीन प्राण वल्लभहिं लुभाई।
शोक सिन्धु में बोरि सबनि बन मध्य छिपाई ॥४८॥
पिय सँग हास बिलाश रास रस रंग रँगाई।
सजनी तू रमनीय दिखाई अति निपुनाई ॥४९॥

ऊपर ते करि कोप सखी सब आँख दिखावैं।
भीतर ते अति प्रेम प्रशंसत तेहि सुख पावैं ॥५०॥
वाको भाग्य सराहि सकल सखि निज मन माहीं।
पावत परम प्रमोद वाक में कोप जनाहीं ॥५१॥
नवल नायिका बृन्द नेह युत वंक भृकुटि करि।
पूछहिं वाको डाँटि हृदय में अति उमंग भरि ॥५२॥
हे सुखदे कछु शीघ्र कहाँ मम प्राणनाथ वर।
कहँ आई तू छाँड़ि त्यागु संकोच मोद भर ॥५३॥
सुनि सबके वर बैन विनय युत सो वर वाला।
बोली बचन सनेह सहित सुचि सुखद रसाला ॥५४॥
मेघ घटा घनघोर भई निशि अति अँधियारी।
मोहिं अकेली छोड़ि सिधारे रास बिहारी ॥५५॥
जिनको विषम बियोग महाँ व्याकुल मोहिं कीना।
अन्वेषति वन मध्य पिया बिन अति दुख लीना ॥५६॥
बन बन भटकत रही खोज पिय की नहिं पाई।
श्रमित भ्रमित दुख भरी हृदय बिच अति अकुलाई ॥५७॥
निशा घोर गम्भीर थकी रसिकेश न पाये।
अहो सखी उर दाह आह नहिं जाहिं जनाये ॥५८॥
हे अलियो दिन रैंन भ्रमण करि भई दुखारी।
येन केन बिधि पाय दर्श तव व्यथा हमारी ॥५९॥
मिटी भयो मन मोद महीपति मुकुट मौलि मनि।
महाराज सिरताज राजनन्दन सुजान पुनि ॥६०॥

मोहिं बंचना कीन बहुरि तुम सबहिं छकायो ।
ठगिया नृपति किशोर चोर सम स्वाँग दिखायो ॥६१॥
महाँ पुरुष को उचित कदा ऐसो न कहावै ।
जैसी नाटक आज नृपति सुत हमनि दिखावै ॥६२॥
कमल लोचनी वाम सुनहु सब सुभग सुयानी ।
प्रीतम प्रेम विभोर सतत पिय को सुख दानी ॥६३॥
तुम सब को सुचि भाव चित्त अर्पित उन माहीं ।
देखहु हृदय बिचार उचित ऐसखि यह नाहीं ॥६४॥
यद्यपि पिया प्रवीण प्रेम पूरक गुन आगर ।
तदपि न सखि विश्वास पात्र नृप सुत सुख सागर ॥६५॥
मैं न करौं विश्वास आप सबहू नहिं कीजै ।
मेरे बचन प्रमाण मानि हिय में धरि लीजै ॥६६॥
भूख व्यथित से सुधा प्रास हँसि छीनि रसिक वर ।
विपिन मध्य दुरि गये कुटिल पिय प्रकृति अधिक तर ॥६७॥
हम सब उनकी प्राप्ति केर भूखी जग माहीं ।
व्यथित रहीं निशि याम सुनत गुन गन हर्षाहीं ॥६८॥
अनायास संयोग बिबस हम सब नव वाला ।
प्राप्त भईं पिय काहिं मधुर मन हरन रसाला ॥६९॥
हम सन को सुख स्वाद देन के समय सु छबि धर ।
दै विश्वास निराश कीन अति छली रसिक वर ॥७०॥
चपल चतुर चितचोर मधुर मन मोहन नटवर ।
बंचक गन शिरमौर महाँ निरदय कठोर तर ॥७१॥

शूर वीर रण धीर भानुकुल कमल विभाकर ।
नृप सुत परम उदार सार सर्वज्ञ मोद घर ॥७२॥
तदपि सखी मम बैन सुनहु अवनीश तनय बर ।
सब बिधि सदा स्वतन्त्र तियन ठगि ठगि विनोद कर ॥७३॥
यद्यपि सब गुन खान प्रेम ग्राहक नव नागर ।
तदपि छलिन शिरमौर राजनन्दन रस सागर ॥७४॥
याते सखि अब राजकुँवर के बचन न मानो ।
रति रस लम्पट लाल सदा स्वारथ बस जानो ॥७५॥
अतः सु दुर्लभ बस्तु मिलन की अति दृढ़ आशा ।
हत भागी जन काहिं जगत में बाँधति पाशा ॥७६॥
आशा पाश बिशेष सदा सबको दुख दाई ।
भव सागर में बोरि देय जन उबरि न पाई ॥७७॥
अनाशक्त आतमा त्यागि जग की सब आशा ।
आत्म सुखहिं अनुभवति लहति सब भाँति हुलासा ॥७८॥
जो असमर्थ महान विषय आशा मन माहीं ।
सो निश्चय मानिये लहै कबहूँ सुख नाहीं ॥७९॥
याते सखियों सकल मानि मम बचन प्रतीती ।
दृढ़ करि हिय बिच धरो करो सुनिये सुचि नीती ॥८०॥
ये श्री सरयू सरित सकल नदियन ते पावत ।

श्रुति प्रतिपादित मार्ग सहित आराधन कीजै ।
उदय होय सौभाग्य हृदय में अति सुख लीजै ॥८३॥
भाग्य बिना पिय मिले सबहिं तजि अनत सिधारे ।
आराधन यदि करैं जगैं बड़ भाग्य हमारे ॥८४॥
पुनि न होय अस चूक प्राणधन हमहिं न तजहीं ।
हम सब हों सर्वज्ञ सतत पद पंकज भजहीं ॥८५॥
कपटिन केर कुचाल कपट हम सब भल जानहिं ।
छली प्रपंचिन केर जाल नीके पहिचानहिं ॥८६॥
पिय सेवा सब भाँति करैं सब मिलि सुख पाईं ।
रीझहिं पिय चित चोर परम रस बोर सदाईं ॥८७॥
यहि बिधि अति चातुर्य भरी वाकी बच रचना ।
सुनि सब सखी समाज कोप भरि बोलीं बचना ॥८८॥
री सुन्दरी सुजान मृषा जनि बात बनावै ।
पिय से हम सब केर हृदय में दोष जगावै ॥८९॥
वे सब बिधि हित मोर सदा मम दृगन सितारे ।
उन बिन सूनो जगत जगत सब अंग हमारे ॥९०॥
मम सर्वस सुख सार उनहिं बिन मृतक समाना ।
यह सब जग जंजाल सकल श्रुति शास्त्र बखाना ॥९१॥
कहु सजनी वह पुण्य काम हमरे क्या आवै ।
पिय से होत वियोग न जो रक्षा करि पावै ॥९२॥
पूर्व पुण्य जो कीन भई नहिं मोहिं सहाई ।
सहा बिपुल श्रम खेद काम हमरे नहिं आई ॥९३॥

री वावरी बताउ बहुरि क्यों पुण्य कमावै।
वृथा बिपुल श्रम सहै अन्त में काम न आवै ॥९४॥
यथा पूर्व कृत पुण्य नहीं करि सकी सहाई।
आगे रच्छा करै आश को करै वृथाई ॥९५॥
तेरो जो अभिप्राय हमहिं वैराग्य सिखावति।
दोष रहित प्रिय प्राणनाथ में दोष बतावति ॥९६॥
तेरे यह उपदेश भरे प्रिय बचन रसाला।
हम सब को अति दुखद बढ़ावत विरह बिसाला ॥९७॥
तेरो प्रिय उपदेश हृदय में मोहिं न भावै।
नृपकिशोर चितचोर माहिं बहु दोष दिखावै ॥९८॥
प्रीतम प्राण अधार परम प्रेमामृत पागे।
हम सब पर बलिहार रहत अतिसय अनुरागे ॥९९॥
पिय मुख कंज मरन्द सरस अनुराग पान करि।
वारि बिमल वैराग्य राग पावव प्रमोद भरि ॥१००॥

दो०—ज्ञान ध्यान वैराग अरु, जोग जज्ञ ब्रत नेम।
शुद्ध भाव बिन होय नहिं, सीताशरण सु क्षेम ॥ ९ ॥

हम सब को मन चित्त भयो सन्लग्न पिया पद।
तेरो ज्ञान न लगै यहा मोसे न वृथा वद ॥ १ ॥
अपर ज्ञान वैराग राग मो मनहिं न भावै।
प्रीतम प्यार पुनीत सतत मम हिय हुलसावै ॥ २ ॥

जेहि ने पिय मुख कंज मन्द मुसुकान निहारी ।
सो सर्वस न्युछाय होत पिय पर वलिहारी ॥ ४ ॥
तासु हृदय में अपर बस्तु में राग न होइ ।
प्रीतम चरण सरोज माहिं वाकी मति मोई ॥ ५ ॥
त्रण सम तजि संसार सार पिय पद पंकज रस ।
पीवहि सदा सनेह सहित प्रीतम वाके बस ॥ ६ ॥
अतः कंज लोचनी ध्यान दै सुनै बचन मम ।
हे सखि श्री साकेत नाथ नन्दन अति अनुपम ॥ ७ ॥
उनके श्री मुख कंज मंजु पावन पराग बिन ।
देखे हम सब बाल लहैं आनन्द नहीं मन ॥ ८ ॥
जब तक पिय बिधु बदन विमल माधुरी न पीवैं ।
तब तक नहिं जल पियैं मरैं अथवा हम जीवैं ॥ ९ ॥
हम सब ने यह सुदृढ़ सुव्रत अपने मन धारो ।
यही नियम सुभ कर्म धर्म सब भाँति हमारो ॥१०॥
आत्म सनेही मोर हृदय मन चोर रसिक वर ।
सकल स्वाद सुख दान मान दायक उदार तर ॥११॥
अपर नियम व्रत पुण्य पिया पद प्रेम न देवै ।
केवल भाव विशुद्ध सकृत साधन रस लेवै ॥१२॥
नाहिन अन्य उपाय अपर मारग श्रम दाई ।
कोटिन करै कलेश प्रेम रस परसि न जाई ॥१३॥
करै कठिन तप त्याग जोग व्रत नेम अपारा ।
बिबिधि दान जप ध्यान महाँ मख अमित प्रकारा ॥१४॥

भये भाव बिन शुद्ध सकल साधन समुदाई ।
करतहु कठिन कलेश अन्त में श्रमहिं लखाई ॥१५॥
साधक सिद्ध सचेत सकल सुचि भाव बढ़ाई ।
पावत "सीताशरण" पिया पद प्रीति सुहाई ॥१६॥
हमरो भाव विशुद्ध सकल प्रीतम पद माहीं ।
हम सब को यहि त्यागि अपर साधन प्रिय नाहीं ॥१७॥
मम मन को सुठि भाव संतजे आत्म रमण सुचि ।
जानहिं पुरुष महान पिया पद प्रबल जासु रुचि ॥१८॥
मम प्रीतम वेदान्त शास्त्र बोधित वैभव वर ।
सुन्दर सरस किशोर रसिक चितचोर मधुर तर ॥१९॥
मुनि जन जीवन प्राण शम्भु सर्वस्व कृपा मय ।
सत् चित् आनँद रूप अमल अनवद्य अनामय ॥२०॥
आगम निगम पुराण सुमृति उप निषद वखाना ।
पर तर परम परेश ब्रह्म व्यापक जग जाना ॥२१॥
अखिल विभुन अभिराम अमल आनन्द प्रदायक ।
करुणा सिन्धु उदार सरस सज्जन सब लायक ॥२२॥
अखिल अवनि अवनीश मुकुट मनि मौलि रसिक वर ।
अमित अनन्त अकाश देत अवकाश मुदित उर ॥२३॥
जासु अंश से ज्याय मान आकाश बखानी ।
वरणत प्रबुध सुजान संत वर वेद सु बानी ॥२४॥
अतएव सज्जन भनित भुवन भूषन भूपति सुत ।
गुनागार सुखसार सरल सब बिधि बिनोद युत ॥२५॥

तासु कृपा की कोर कलित कमनीय प्रसादा ।
पाये विन हम सकल लहैं नाहिन अह्लादा ॥२६॥
उनके पावन पाद पद्म मकरन्द सुहावन ।
हम सबको सुख दानि होय सब बिधि मन भावन ॥२७॥
साधन अपर महान सुफल हम कदा न चाहैं ।
केवल पिय पद कंज मंजु में नेह निबाहैं ॥२८॥
सब साधन को सुफल एक मम प्राण अधारे ।
निर्मल मूर्ति सु कृपा मयी हिय बसति हमारे ॥२९॥
हमरो मन बुधि चित्त सतत पिय पद अनुरागा ।
अन्य न करै प्रवेश प्रबल रति रस जिय जागा ॥३०॥
येही बिमल विवेक सहित उत्तर सब ही को ।
सुनि सो बाल विनोद भरी सुख लहत अमीको ॥३१॥
जो पिय पाठ पढ़ाय नायिका नवल पठाई ।
सुनि सखियन के बैन रही अतिसय सकुचाई ॥३२॥
सब सखि परम प्रवीण सरस सर्वज्ञ गुणाकर ।
पिय पद कंज मरन्द पगीं सब हिय उमंग भर ॥३३॥
पुनि मृगनयनी बाल निकर तेहि सखि तन माहीं ।
नहिं सम्भोग सु चिह्न निरखि सब वाहि सराहीं ॥३४॥
कहि मृदु बैन रसाल मोद वाको अति दीना ।
पुनि रमणीय सु विपिन माहिं प्रवेश मिलि कीना ॥३५॥
सँग लीने सो बाल पिया ढिग सों जो आई ।
अन्वेषहिं प्रिय प्राणनाथ सुन्दर सुख दाई ॥३६॥

तासु कृपा की कोर कलित कमनीय प्रसादा ।
पाये बिन हम सकल लहैं नाहिन अह्लादा ॥२६॥
उनके पावन पाद पद्म मकरन्द सुहावन ।
हम सबको सुख दानि होय सब बिधि मन भावन ॥२७॥
साधन अपर महान सुफल हम कदा न चाहैं ।
केवल पिय पद कंज मंजु में नेह निबाहैं ॥२८॥
सब साधन को सुफल एक मम प्राण अधारे ।
निर्मल मूर्ति सु कृपा मयी हिय बसति हमारे ॥२९॥
हमरो मन बुधि चित्त सतत पिय पद अनुरागा ।
अन्य न करै प्रवेश प्रबल रति रस जिय जागा ॥३०॥
येही बिमल विवेक सहित उत्तर सब ही को ।
सुनि सो बाल विनोद भरी सुख लहत अमीको ॥३१॥
जो पिय पाठ पढ़ाय नायिका नवल पठाई ।
सुनि सखियन के बैन रही अतिसय सकुचाई ॥३२॥
सब सखि परम प्रवीण सरस सर्वज्ञ गुणाकर ।
पिय पद कंज मरन्द पगीं सब हिय उमंग भर ॥३३॥
पुनि मृगनयनी बाल निकर तेहि सखि तन माहीं ।
नहिं सम्भोग सु चिह्न निरखि सब वाहि सराहीं ॥३४॥
कहि मृदु बैन रसाल मोद वाको अति दीना ।
पुनि रमणीय सु बिंपिन माहिं प्रवेश मिलि कीना ॥३५॥
सँग लीने सो बाल पिया डिग सों जो आई ।
अन्वेषहिं प्रिय प्राणनाथ सुन्दर सुख दाई ॥३६॥

यद्यपि दियो बियोग विषम मन व्यथित बनायो ।
प्रीतम प्राण अधार सखिन बन माहिं भ्रमायो ॥३७॥
तदपि अनन्या सखीं सकल पिय पद अनुरागीं ।
बन बन खोजत फिरहिं हृदय उज्वल रस पागी ॥३८॥
सब मृगनयनी नेह नमित नायिका नवीनी ।
आगे करि पद्मिमनी सखी बन माहिं प्रवीनी ॥३९॥
सकल भोग से बिमुख बिपिन मधि विहरहिं कामिनि ।
अन्वेषहिं नायिका नवल नायक अभिरामिनि ॥४०॥
सकल जगत के भोग महाँ विष से दुख दाई ।
पिय पद कंज मरन्द प्रीति पल पल अधिकाई ॥४१॥
स्वाभाविक वैराग्य परम उत्तम सब माहीं ।
स्वसुख गन्ध भी लेश मात्र इनके मन नाहीं ॥४२॥
पिय पद पावन प्रीति रीतिं रस मगन कुमारी ।
खोजहिं बिपिन मझार महाँ रस रास बिहारी ॥४३॥
सत्या अभिधा नाम महा पावनि प्रिय नगरी ।
विमला विसद विशेष अयोध्या सब सुख अगरी ॥४४॥
तासु ईश श्री चक्रवर्ति महराज तस्य सुत ।
नाम राम अभिराम सकल शुभ गुन सुख संयुत ॥४५॥
तिनके पावन पाद पद्म मधि प्रेम परम सुचि ।
हिय बिच सतत बसाय सकल सेवहिं अपार रुचि ॥४६॥
प्रीतम बिषम वियोग माहिं भी भान होय जब ।
पिय से मम सम्बन्ध नयन विकसे विशेष तब ॥४७॥

यहि बिधि प्रेमावेष सखी सब बिपिन भ्रमाहीं ।
मणिमय मंजुल कुंज मध्य पिय देखि सिहाहीं ॥४८॥
सोय रहे सुकुमार श्याम सुन्दर सुख सागर ।
पीताम्बर तन ओढ़ि नवल नायक गुन आगर ॥४९॥
चहुँ दिशि हंसी मृगी मधुकरी कोयल प्यारी ।
सेवहिं सहित सनेह सकल रस रास बिहारी ॥५०॥
इमि निज प्राण अधार रसिक चूड़ामणि मोहन ।
सुख सुषमा आगार रूप रस सार सुजोहन ॥५१॥
आश्रित जन प्रिय करन नवल नायक रस रासी ।
सुचि सुशील सुकुमार मधुर रस रास बिलासी ॥५२॥
कंकण किंकिणि नूपुरादि स्वर सुनि पिय जागैं ।
यहि भय से सब मन्द मन्द गमनत रस पागैं ॥५३॥
सोवत पिय को निरखि सकल सखि हिय सुखपाई ।
धीरे धीरे आय पास बैठीं हर्षाई ॥५४॥
प्रेम बिबस कमनीय भाव सात्विक तन जागत ।
कम्पित सकल शरीर सखी पिय छबि रस पागत ॥५५॥
जब बीते कछु काल सखिन यस बात जनाई ।
जागत प्राण अधार नींद लीला दिखलाई ॥५६॥
हमनि परीक्षा करन हेत अति दम्भ बनाई ।
सोवत राजकिशोर महाँ रस निधि रघुराई ॥५७॥
भली भाँति सखि जानि सरस वीणादि उठाई ।
गावहिं गीत रसाल सुनत कोकिल सकुचाई ॥५८॥

विकसित अन्तः करण प्रेम रस धार बहाई ।
कामिनि काम कलोल केलि कौतुक कुशलाई ।।५९।।
प्रीतम को दर्शाय सकल सखियाँ सुकुमारी ।
बनिता गन उत्तमा गान गावहिं मन हारी ।।६०।।
उधर बिनाही नीद रहे सोवत रघुराई ।
सखिन अलौकिक भाव सरस वीणा सुखदाई ।।६१।।
सुनि सुचि गीत रसाल रसिक चूड़ामणि मन हर ।
उठि बैठे हर्षाय श्याम सुन्दर सनेह घर ।।६२।।
कम्पित सखिन निहारि सतत परिकर मन रंजन ।
अरुण कमल सम नैन बैन शुक पिक मद भंजन ।।६३।।
नील सुमणि सम कान्ति सदा आश्रित अभीष्ट प्रद ।
करि भ्रू भंग सनेह सहित नटवर नागर वद ।।६४।।
परम चातुरी युक्त सरस सुख स्वाद सहित पिय ।
अति प्रिय बचन रसाल लाल बोलत उदार हिय ।।६५।।
हे प्रिय प्रिया समूह परम प्रेमामृत पागी ।
हमहिं त्यागि कहँ गईं रहीं केहि कारण लागी ।।६६।।
हे सुन्दरि गण श्रेष्ठ तुमहिं खोजत वन माहीं ।
हम भटके बहु भाँति तुमहिं पाये कहुँ नाहीं ।।६७।।
अन्वेषत श्रम पाय आय यहिं कुंज मझारी ।
सोय रहे सब भाँति सुरति बिसरैन तिहारी ।।६८।।
पर हे भद्र स्वरूप सकल मम प्रिया प्रवीनी ।
स्वयं आप कर मिलीं सकल सुन्दरि रस भीनी ।।६९।।

हमरे बिषम बियोग माहिं तरुणी गन सारी ।
हो अधीर बन फिरीं क्लेश पाये अति भारी ॥७०॥
यहि बिधि अति चातुर्य मयी पिय की प्रिय बानी ।
मधुर सरस मन हरन परम प्रेमामृत सानी ॥७१॥
परम शान्ति मय बचन रचन सुनि सखी अयानी ।
पिय बियोग सन्तप्त सकल बोलीं वर वानी ॥७२॥
यथा विगत निशि कान्ति हीन कमनीय सुधाकर ।
तिमि बिधु बदनी बाल कोप युत चपल गुनाकर ॥७३॥
अरुण बिम्ब सम अधर सरस फरकत सबही के ।
मृग सावक ज्यों नयन नवल लागत अति नीके ॥७४॥
राहु ग्रसित पुनि मुक्त चन्द्र सम बदन सुहावन ।
पावन परम प्रसन्न प्रेम प्रतिभा प्रगटावन ॥७५॥
प्रेमावेष विशेष प्रणय युत प्रिय नागर सों ।
नृप किशोर चितचोर मधुर रस सुख सागर सों ॥७६॥
पकरि युगल वर बाहु विपुल बिधु बदनी बाला ।
बोलीं अति प्रिय बैन मधुर मन हरन रसाला ॥७७॥
हे प्रिय प्राण अधार अमल अनवद्य अजित वर ।
धन्य धन्य सब भाँति आप रसिकेश मधुर तर ॥७८॥
यहि भूतल में एक आप ही ऐसे नागर ।
समता में नहिं अपर आप सम आप गुनाकर ॥७९॥
कहिये भला रसेश आप में जो अनुरागत ।
कलह रहित हम तियन अँधेरी निशि में त्यागत ॥८०॥

निशा घोर गम्भीर मास भादौं अधियारी ।
शिवा आप के कौन सकै निज प्रियन बिसारी ।।८१।।
तजि निज रमणी वृन्द बिपिन में जाय हिराई ।
ऐसो पुरुष उदार कौन तुम बिन सुखदाई ।।८२।।
निज पुरुषत्व भिमान करै मन में अधिकाई ।
अपुरुष को कर्त्तव्य करै हिय में न लजाई ।।८३।।
केवल ऐसे एक आप ही कृपा निधाना ।
ऐसो पुरुष कठोर हृदय जग में न लखाना ।।८४।।
प्रीतम तुम्हरे साथ सहस्रन नवल सहेली ।
एक एक सब लोक नयन उत्सव अलबेली ।।८५।।
अपने रूप अनूप अखिल जग आनन्द दानी ।
सुचि सुशील सुकुमारि सरस सुषमा सुख खानी ।।८६।।
क्यों न बड़ो नृप होय करै किन कोटि उपाई ।
पर ये बाल रसाल प्राप्त नहिं होयँ कदाई ।।८७।।
अपर नरन की कौन कथा जो इनको पावै ।
कोटिन करै कलेश चरण हू परसि न जावै ।।८८।।
हैं हम पुरुष प्रधान आप अपने मन मानत ।
यह सर्वथा अयोग्य निजहिं पिय नहिं पहिचानत ।।८९।।
हे अवनी पति सुवन आप को रूप उदारा ।
विश्व विमोहन हार परम रमनीय अपारा ।।९०।।
निज पौरुष से आप अखिल जग पोषन हारे ।
सब बिधि सुषमा सदन मदन मनहर अति प्यारे ।।९१।।

हम सब को तव रूप तथा पौरुष दुखदाई ।
घातक अन्तक सरिस सकल बिधि हे रघुराई ॥९२॥
याते हे रसिकेश सरस सुन्दर सुख ऐना ।
रूप उदार अपार मार मर्दन प्रिय नयना ॥९३॥
जो गुन रूप तुम्हार होय आश्रित दुखदाई ।
वाहि न धारण करैं विनय मानिय हर्षाई ॥९४॥
यदि पौरुष अरु रूप इनहिं पिय विफल न करहू ।
तौ मेरी बर विनय आप अपने मन धरहू ॥९५॥
मम हिय से शिव शत्रु काम को देहु हटाई ।
हम सब होयँ निहाल मदन अतिसय दुखदाई ॥९६॥
यह खल कुटिल कुचाल नाथ तुम्हरो बल पाई ।
हम सब अबलन हृदय मध्य उत्पात मचाई ॥९७॥
यदि पिय कहो कि काम बिना तव काज न सरई ।
तव मुख चन्द अमन्द निरखि हिय आनन्द भरई ॥९८॥
लहि पद पंकज दर्श सुखी चिरकाल रहेंगी ।
दूषित काम कलाप हटाइय मोद लहेंगी ॥९९॥
अतिसय कोमल हृदय बज्रसम तिनहिं बनाई ।
वाणी दूषित करै काम कौतुक दुखदाई ॥१००॥

दो०—प्रभा पुँज कल कंज सम, श्याम सुद्युति कमनीय ।
सीताशरण सनेह निधि, रस सागर रमनीय ॥१०॥

क्षय करि सकल शरीर नयन यश धन की हानी ।
मिलै अवसि ही ताहि परै यामें जो प्रानी ॥ १ ॥

यहि विधि प्रेम प्रमाद छकीं छबि धाम छबीली ।
जल्पहिं बचन अनेक भाव भरि नवल रँगीली ॥ २ ॥
आत्म सनेही नाथ हमारे प्राण अधारे ।
इनकी हम सब भाँति हृदय हर मम दृग तारे ॥ ३ ॥
पिय को निज सर्वस्व मानि हिय कोप बढ़ाई ।
प्रणय भरीं प्रिय प्रियाँ पकरि पिय को इठलाई ॥ ४ ॥
मृदुल सरस कर कंज बाँधि मुटिका मुसुकाई ।
कोइ प्रसून के गुच्छ मारि हिय में हुलसाई ॥ ५ ॥
अमल कमल दल मारि मधुर मद मत्त सहेली ।
प्रणय कोप वश भरीं सकल सखियाँ अलबेली ॥ ६ ॥
प्रेम परत्व अपार अमित महिमा जगमाहीं ।
"सीताशरण" सनेह सरिस बन्धन कोउ नाहीं ॥ ७ ॥
कितनी बाल रसाल पयद से करत प्रहारा ।
पियत पिया को अधर सुधा हिय मोद अपारा ॥ ८ ॥
अधरामृत करि पान सकल विरहाग्नि बुझाई ।
पावहिं शान्ति मुखार विन्द विकसित अधिकाई ॥ ९ ॥
विलसत बिमल मयंक सरिस विधु बदन सुहावन ।
लाजत लखि राकेश कान्ति प्रीतम मन भावन ॥१०॥
तेहि क्षण करत कटाक्ष कान्त कान्तन मन रंजन ।
स्वजन देवतरु सरिस सरस आँजे दृग अंजन ॥११॥
वांच्छित सुख रस दान प्रेम रस खान श्याम तन ।
भाव भरे रसिकेश स्वाद सुख देत मुदित मन ॥१२॥

पूरति परम प्रकाश कान्ति कमनीय बदन वर।
सुषमा सदन सनेह सिन्धु सुचि सरस सरल तर ॥१३॥
कामिनि काम कलोल कला पूरक परमीशा।
सत् चित् आनँद रूप अमल अनवधि अवनीशा ॥१४॥
प्राकृत प्यार सु पार सार सर्वज्ञ सुखद वर।
गुनागार रस रमन सरस सज्जन प्रमोद कर ॥१५॥
रसिकन जीवन प्रान सतत परिकर मन रंजन।
प्रीतम परम प्रवीन प्रेम पूरक अनुरंजन ॥१६॥
कलित ललित कर कंज कंज चिह्नित सुख रूपम्।
कामिनि विषम वियोग हरन अति अमल अनूपम् ॥१७॥
काम केलि कल कुशल कलित कामिनी सुहिय हर।
नाशक प्राकृत काम दिव्य रस धाम सु छवि धर ॥१८॥
तेहि छण निज कर कंज मंजु गहि नवल नागरी।
अलिंगन अँग करत रूप रस गुन उजागरी ॥१९॥
परसि चिबुक लगि कण्ठ करत मर्दन पय धर वर।
बाँटत परमानन्द अमल अनवद्य मधुर तर ॥२०॥
अब श्री सूत सुजान मंगला स्वाशन करहीं।
मधुर माधुरी मगन विमल मानत सुख भरहीं ॥२१॥
जयति प्राण धन अमल कमल सम रूप सुघर वर।
नयन सयन से स्वजन हृदय वांच्छित सुख रस कर ॥२२॥
दृग अंजन सम श्याम परम अभिराम सुमन हर।
नवल नायिका नेह भरीं निरखहिं प्रमोद भर ॥२३॥

इमि वर बाम बिनोद सहित प्रीतम सुजान सँग ।
पारण करहिं प्रसन्न हृदय रँगि पिय के रस रँग ॥२४॥
श्री गिरिराज कुमारि तोष हित जो व्रत कीना ।
तिन की कृपा कटाक्ष पाय पिय सँग सुख लीना ॥२५॥
कदली कटहर आम कन्द जामुन अनार वर ।
दाख चिरौंजी किस मिस अरु अंगूर मधुर तर ॥२६॥
पगि पिय के अनुराग परस्पर नबल नागरीं ।
पावहिं परम प्रमोद सहित रस निधि उजागरीं ॥२७॥
निज कोमल कर कंज मंजु से पियहिं पवाई ।
शेष प्रसादी पाय आप सुख सिन्धु समाई ॥२८॥
इमि रघुराज किशोर सखिन चितचोर रसिक वर ।
अज अनन्त अखिलेश अमल अनवद्य सरस तर ॥२९॥
मन बानी गोतीत अगुन गुन सागर नागर ।
पर ब्रह्म परमीश परम प्रतिभा सुख सागर ॥३०॥
ये नायिका नवीन नेह सुचि सरस सुधा रस ।
पगीं रहत निशि याम किये वल्लभ अपने बस ॥३१॥
पिय को पावन प्रेम पान बिन मृतक समाना ।
निरखि मधुर मुख चन्द्र माधुरी हिय हर्षाना ॥३२॥
पिय पद पंकज दर्श बिना जीवन नहिं चाहैं ।
अचल अमल अनुराग सुदृढ़ करि सतत निवाहैं ॥३३॥
यहि सुख सम नहिं अपर इनहिं जग में सुख दूजा ।
परमानन्द विभोर करहिं प्रीतम पद पूजा ॥३४॥

बदत बिमल वर बैन सूत सब सन्त समाजा ।
यह रहस्य अति गोप्य मधुर तम किय रघुराजा ।।३५।।
मम सद्गुरु श्री व्यास देव दीनो उपदेशा ।
सतत शुद्ध मन मोद सहित सुमिरै अवधेशा ।।३६।।
शुद्ध भाव बिन भये कदा नहिं कोउ अधिकारी ।
नित्य भावना योग रास रस अति सुखकारी ।।३७।।
सब सुख रस को मूल जानि याको मन माहीं ।
मन में करहु बिचार सतत संसय कछु नाहीं ।।३८।।
सुर तरु अरु सुर धेनु कदा इन सम नहिं कोई ।
ध्यावै प्रेम समेत सदा बड़भागी सोई ।।३६।।
जयति अमल आनन्द कन्द रघुनन्द द्वन्द हर ।
जय जय परम उदार सार सर्वज्ञ मधुर तर ।।३०।।
जयति अदभ्र अशेष अगुन गुन खान ज्ञान घन ।
जय जय राजकिशोर परम रस वोर मोद बन ।।३१।।
जयति श्याम सुख सदन बदन सुषमा सुख सागर ।
जय जय रसिक नरेश वेष नटवर नव नागर ।।३२।।
जयति कोटि कन्दर्प दर्प हर सरल गुनाकर ।
जय जय राजकुमार प्यार वर्धक सुषमा घर ।।३३।।
जयति रसिक रस दान रास रसिया रस रंजन ।
जय जय सरस स्वरूप भूप मन आनँद कन्दन ।।३४।।
जयति चपल चितचोर चतुर चूड़ामनि हिय हर ।
जय जय मधुर मयूर सरिस प्रिय बचन सुखद वर ।।३५।।

जयति कामिनी काम कला पूरक मन भावन ।
जय जय परिकर निकर हृदय रस प्रेम बढ़ावन ॥३६॥
जयति सरस सुकुमार श्याम सुन्दर सुशील वर ।
जय जय "सीताशरण" प्रीति वर्धन उदार तर ॥३७॥

दो०–जयति सरस सुषमा सदन, सुन्दर शील उदार ।
जय जय सीताशरण पिय, प्रेमिन प्राणाधार ॥११॥

इति श्री युगल रहस्य माधुरी विलाशे श्रीराम
रासे सीता शरण सुमति प्रकाशे
चतुर्थो अध्याय: सम्पूर्णम् भवतु: ।

❁

❁ श्रीमत्यै सर्वेश्वर्यै श्रीचारुशीलायै नम: ❁

* श्री मैथिली मधुर चालीसा *

दोहा–हे मम प्राण सजीवनी, श्री मैथिली उदार ।
रसिक जनन रसदायिनी, रसिकेश्वर हियहार ॥

चौपाई–

हे मम जीवन मूरि किशोरी । विश्वबिमोहनपिय चितचोरी ॥
हे रसरूप रसिक रस दानी । जगजीवन रघुबर पटरानी ॥
हे रसिकेश्वर प्राण पियारी । मम जीवनधन जनक दुलारी ॥
हे छबिरूप शील उजियारी । प्रेम पगीं मिथिलेश कुमारी ॥
हे रघुवर सर्वस सुखखानी । सर्वेश्वर पिय की महरानी ॥
हे प्रीतम चित चोरनहारी । मेरी सर्वस अवनि कुमारी ॥

कृपा छमा करुणामयि मूरति । अति मंजुल मृदु गौर सुसूरति ॥
पियपद प्रीति बढ़ावन हारी । परिकर हिय रस बर्धनि वारी ॥
हे जीजी वह दिन कब अइहैं । दृगभरि हम तव दर्शन पइहैं ॥
सो केवल तव कृपा अधारा । जप तप साधन को न सहारा ॥
जी जी तव पद दर्शन पाई । नखसिख छवि लखिमोदसमाई॥
मैं पदकंज गहौं अकुलाई । निज तन मन की सुरति भुलाई ॥
जीजी हिय वात्सल्य अपारा । ममशिरकरधरि करहिं दुलारा॥
स्वकर उठाय अंक बैठारी । अति सनेह मम गल भुजडारी ॥
निज अंचल दृग पोछिहमारे । शिरकर फेरत परम सुखारे ॥
चूमि चूमि मुख हिय हर्षाई । प्रमुदित पुनिपुनि कण्ठ लगाई॥
अतिसनेह निज हृदय लगाई । बहुबिधि प्यार करत दुलराई ॥
ममछबिनिरखिनिरखि वलिहारी ।होतहृदय पावत सुखभारी ॥
पूछहुगी मम कुशल सप्रेमा । यहिविधि कबकरिहो ममछेमा॥
मैं जी जी कहिहिय लपटाई । धरि गल भुज तव प्यारसमाई ॥
बोलौंगी मृदु बचन सुखारी । जी जी पदलखि कुशल हमारी ॥
बिन जीजी पदपद्म बिलोकी । कोउन कबहुँहोय सकत अशोकी
निजपद कंजन आश्रितजानी । दर्शन दियो कृपा गुन खानी ॥
जी जी मैं जप तप नहिं जानौं । तुम्हरी कृपा आश हिय आनौं ॥
अब विनती मम हृदय धरीजै । चरण कमलते विलग न कीजै ॥
जीजी तव पद पंकज दासी । रहिहौं नित बनि प्रेम पियासी ॥
करिहौं चरण कमल सेवकाई । अति सनेह युत भाग्य मनाई ॥
जग वैभव ऐश्वर्य न चाहौं । तव पद पंकज प्रेम निबाहौं ॥

सब विधि आपन सत्त्वभुलाई । निशिदिनकरौं चरण सेवकाई ॥
पियसँग कुञ्ज निकुन्जन माहीं । तव पद पूजत हिय हर्षाहीं ॥
हे जीजी लघु भगिनि तुम्हारी । तुमहित्यागिकिमिहोइसुखारी॥
जी जी समकोउ वरद न आना । यदपि कहावत बहु भगवाना ॥
और कौन की बात चलावैं । जी जी समत पियहु न पावैं ॥
शरणजाय याचन रुचिराखी । सकृत बार प्रीतम अस भाषी ॥
जी जी सम कोउ सुना न काना । तवसमान जेहिकहौं प्रमाना॥
याते निज लघु भागिनि निहारी।चरणशरण रखि करहुसुखारी॥
जी जी तव पद पद्म बिसारी । स्वर्ग नर्क दूते दुखकारी ॥
तव पद पंकज सर्वस मोरे । गुनशीला विनवौं कर जोरे ॥

दो०–गुनशीला यहि भाँति कब, करिहो मोहिं दुलार ।
जी जी अपनी भगिनि लघु, जानि करिय अतिप्यार॥१॥
यही एक आशा प्रबल, चाह हृदय नहिं और ।
जो जी के पद पद्म तजि, गुनशीला नहीं ठौर ॥२॥
क्षमा, कृपा, करुणा सदन, जी जी प्राणाधार ।
गुनशीलहिं अपनाइये, निज लघु भगिनि विचार ॥३॥
प्रीतम प्राण सजीवनी, मम जीवन आधार ।
कृपा दृष्टि की वृष्टि करि, दर्शाइय निज प्यार ॥४॥

–: प्रार्थना :–

राजेश्वरी सर्वेश्वरी, जगदीश्वरी जनकात्मजे ।
रसिकेश्वरी हृदयेश्वरी, प्राणेश्वरी हे अवविजे ॥१॥
छबि सागरी नव नागरी, गुण आगरी हे भूमि जे ।
मृदु हँसनिबोलनि मिलनि वारी, सदा जयति विदेह जे॥२॥

भोग और भगवान

१--भोग के प्राप्ति की इच्छा जगते ही मनमें अशान्ति उत्पन्न होती है। फिर भी भोग की प्राप्ति रुचि के अनुकूल नहीं होती है। भगवान के प्राप्ति की इच्छा होते ही मनमें शान्ति प्राप्त होती है।

२--भोगों की प्राप्ति प्रयास करने पर भी अधूरी ही रहती है। भगवान जिसको मिलते पूर्ण ही मिलते हैं।

३--भोगों की प्राप्ति कर्माधीन है, मन की इच्छानुसार किसी को भी भोग प्राप्त नहीं होते। भगवान की प्राप्ति भगवान की कृपा से शुद्ध भावना करने पर होती है। कर्म के फल स्वरूप भगवान नहीं मिलते।

४--भोगों की प्राप्ति होने पर दुखद्वन्द सताता है। भगवान की प्राप्ति होने पर दुखद्वन्द समाप्त हो जाते हैं।

५--भोगों का स्मरण करके मरने वाला नीच योनियों में प्राप्त होता है। भगवान को स्मरण करके मरने वाला भगवान को ही प्राप्त हो जाता है।

६--भोग जितने अधिक प्राप्त होते हैं, जीव उतना ही संसार बन्धन में जकड़ता जाता है। भगवान की प्राप्ति होते ही संसार बन्धन छूट जाता है।

७--भोगों को भोगने वाला असुविधा पूर्वक मरता है। भगवान को मिलने वाला भगवान की कृपा से भगवान के नित्य धाम को प्राप्त होता है।

८--भोग प्राप्ति के बाद रोग लगता है। भगवान की प्राप्ति के बाद भवरोग समाप्त हो जाता है।

९--भोग सब नाशवान है। भगवान अविनासी हैं।